



राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार



राजभाषा स्मारिका
(9वाँ संस्करण-2021)

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

संदेश

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी (एनआरआईडीए) द्वारा हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर हिन्दी पत्रिका का नौवा संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख कार्यालय में काम करने वाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति रुचि दर्शाते हैं। इन लेखों के प्रकाशन से कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों तथा कर्मचारियों का हिन्दी के प्रति और अधिक रुझान बढ़ेगा और उनको हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन भी मिलेगा। विगत वर्ष में कार्यालय में हिन्दी के कामकाज में बढ़ोतरी दर्ज की गई है जो कि एक प्रसन्नता का विषय है। हमें अधिक से अधिक काम हिन्दी में करते रहना चाहिए।

निःसंदेह, हिन्दी हमारे राष्ट्र की जोड़ने एवं हमारे देश के नागरिकों को एकसूत्र में पिरोने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जोकि हमारे देश की एकता और अखंडता को बनाए रखती है। हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है और उसे हम सबको अपनाना है।

आशा है कि कार्यालय के समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत की गई मौलिक रचनाओं से 'राजभाषा स्मारिका' का यह अंक समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों के ज्ञान में और अधिक वृद्धि करेगा।

आशीष गोयल

डॉ आशीष कुमार गोयल
महानिदेशक

विषय सूची

क्रसं.	रचना	रचयिता / संकलनकर्ता	पृष्ठ
1.	अच्छी सेहत एक नियामत	श्री दीपक आशीष कौल निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	2
2.	मैं क्यों	श्री राम अवतार "भारती" उप निदेशक (पी. I)	5
3.	टीका	श्री सी पी एस यादव सहायक निदेशक (पी- I.)	6
4.	बेहतर है कि	सुश्री अनु ठाकुर सीनियर डेवलपर (टी.सी.आई)	7
5.	बालक ध्रुव के ध्रुव तारा बनने की कथा	श्री राहुल चराया सी.ए. (वित्त एवं प्रशा.)	8
6.	गुरु का स्थान	श्री नवीन जोशी कार्यकारी सहायक (पी. I)	9
7.	रावण की सीख	श्री मोहित माथुर कार्यकारी सहायक (तकनीकी)	10
8.	यदि मेरे पंख होते	श्री विजय इंग्ले प्रोग्रामर	11
9.	प्रदूषण पर लॉकडाउन	श्री प्रदीप चितोड़ लेखापाल	12
10.	पन्ना धाय	श्री देवीसिंह गुर्जर निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	13
11.	नारी और शिक्षा	सुश्री सैटी एंथोनी कार्यकारी सहायक (पी. I I I)	14
12.	अदनी सी नौकरी	सुश्री पूनम देसाई कार्यकारी सहायक (पी. I)	15
13.	माण्डव्य मुनि के श्राप से यमराज का विदुर बनना	श्री रामकृष्ण पोखरियाल निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	16
14.	खुरचन	सुश्री वीनू शर्मा कार्यालय सहायक (पी. I I I)	17
15.	परमात्मा और किसान	सुश्री प्राची गुसाई कार्यकारी सहायक (पी. I I I)	18
16.	सकारात्मक सोच	श्री रोहित कुमार निजी सहायक (पी. I I)	19
17.	सुखी जीवन का रहस्य	सुश्री गुलशन अरोड़ा निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	20
18.	बुद्धिमान मंत्री	श्री जावेद कार्यकारी सहायक (पी. I I)	21
19.	खिलखिलाते फूल	श्री गोकुलानंद फुलारा कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	22
20.	हिन्दी शब्द की उत्पत्ति – विकास यात्रा	सुश्री सविता पोखरियाल कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	23
21.	मातृभूमि	सुश्री निशा सिंह कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	24
22.	आखिर क्यों दिया राम ने लक्ष्मण को मृत्युदंड	श्री भूपेन्द्र कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	25
23.	जीवन में लक्ष्य की महत्ता	श्री पवन स्टोर अटैंडेंट (वित्त एवं प्रशा.)	26
24.	सत्य और असत्य	श्री भवानी मिश्र एमटीएस	27
25.	लालच बुरी बला	श्री बिशन सिंह एमटीएस	28
26.	ऐ सुख क्या है तेरा ठिकना	श्री शाहिद स्टेशनरी इंचार्ज	29
27.	दोस्त का जवाब	श्री संजय एमटीएस	30
28.	एक बाल्टी दूध	श्री मोहम्मद आसिफ एमटीएस	31
29.	ईमानदारी का इनाम	श्री उमेश सिंह एमटीएस	32
30.	अवसर की पहचान	श्री प्रदीप सिंह एमटीएस	33
31.	जैसी करनी, वैसी भरनी	श्री रोहन कुमार सुरक्षा गार्ड	34

अच्छी सेहत एक नियामत



मानव शरीर एक पेचीदा मशीन के सामान हैं और इसमें हर अंग का एक दूसरे के साथ अनूठा-सा जुड़ाव रिश्ता है। यदि मनुष्य शरीर का एक अंग ठीक से कार्य नहीं करता है तो इसका कुछ न कुछ असर दूसरे अंगों पर भी पड़ता है और मानव शरीर की मशीन में रुकावट पैदा होने लगती है। इसीलिए हर मनुष्य का अपने प्रति दायित्व है कि वह अपनी सेहत के प्रति सजग रहे ताकि उसकी आखिरी श्वास तक उसका शरीर संतोषजनक रूप से कार्य करता रहे और वह एक स्वस्थ जीवन



व्यतीत कर इस धरती से विदाई कर सके। इस बारे में कोई दो राय नहीं हैं कि एक मनुष्य का स्वास्थ्य उसके पूर्वजों के स्वास्थ्य के इतिहास के ऊपर भी निर्भर करता है व कुछ बीमारियाँ जो कि आनुवंशिक हैं, उनके होने की संभावना पीढ़ी दर पीढ़ी बनी रहती है परंतु किसी भी मनुष्य के स्वास्थ्य की स्थिति का एक बड़ा हिस्सा उसके अपने हाथ में रहता है, जिसको अच्छी आदतों व पौष्टिक भोजन के आधार पर लम्बे समय तक दुरुस्त रखा जा सकता है। इस लेख में हम उन महत्वपूर्ण बिंदुओं का विश्लेषण करेंगे जिनके पालन से हम एक स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

पौष्टिक आहार:- अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर में पौष्टिक आहार का समावेश सबसे ज्यादा महत्व रखता है। हमें अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन समुचित व संतुलित आहार लेना चाहिए जिसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन व खनिज पदार्थ का उचित हिसाब से मिश्रण हो ताकि शरीर की विभिन्न प्रकार की जरूरतों को पूर्ण किया जा सके।



इन सभी चीजों में किसी भी एक तत्व का खाने में जरूरत से अधिक मात्रा में होना नुकसानदायक हो सकता है।

दोस्तों, कृपया याद रखें कि आहार के मामले में सयंम बरतना अति आवश्यक होता है, अतः अपने दैनिक आहार में इन सभी तत्वों को उचित मात्रा में शामिल करें। फल व हरी मौसमी सब्जियों का सेवन भी बहुत जरूरी है क्योंकि इनसे हमारे शरीर को विटामिन व पोषण उचित मात्रा में प्राप्त होते हैं जिनसे हमारे शरीर की सेहत बनी रहती है व हमारी पाचन प्रणाली भी दुरुस्त रूप से कार्य करती है। आहार ग्रहण करने से संबंधित एक और महत्वपूर्ण पहलू जो कि हमें याद रखना चाहिए, वह यह है कि हमें एक बंधे हुए समय पर ही अपना दैनिक भोजन ग्रहण करना चाहिए। इससे हमारे शरीर में ऊर्जा दिन-भर बनी रहती है जिससे कि शरीर को कार्य करने की शक्ति निरंतर मिलती रहती है। भोजन के साथ ही हमें हर दिन उचित मात्रा में पानी भी पीना चाहिए ताकि हमारा शरीर ठीक से जल मिश्रित रहे व हमारी किडनियां भी बाधा रहित प्रकार से शरीर के रक्त को साफ करने का कार्यकलाप करती रहे। दिन-भर में हमें लगभग 2-3 लीटर पानी व अन्य तरल पदार्थ लेने चाहिए ताकि हमारा शरीर सुचारु रूप से कार्य करता रहे।

व्यायाम:- अच्छी सेहत के लिए पौष्टिक भोजन के साथ ही शरीर के हर अंग को उचित व्यायाम की भी आवश्यकता होती है। व्यायाम करने से हमारा शरीर स्वस्थ, फुर्तीला व लचीला बना रहता है और इसकी कोशिकाएं व हड्डियाँ मजबूत भी बनती हैं। हम अपनी उम्र के हिसाब से दैनिक व्यायाम जैसे दौड़ना, चलना, खेलना व अन्य कसरत करना अपनाकर अपने शरीर को चुस्त व स्वस्थ रख सकते हैं। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हर दिन कम से कम 30 मिनट अपनी दिनचर्या में शारीरिक व्यायाम के लिए निर्धारित करें। शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ अपने दैनिक जीवन में मानसिक व्यायाम करना भी जरूरी है। मानसिक व्यायाम हमारे मानसिक संतुलन को बरकरार रखता है और वृद्धावस्था में होने वाले मानसिक रोगों से हमारी सुरक्षा करता है। अपने दिमाग की चुस्ती-फुर्ती को उम्र भर बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम मानसिक व्यायाम जैसे क्रास्वर्ड पहलियों व सुडोकू जैसी पहलियों को सुलझाए या फिर कोई नई भाषा व संगीत वादय सीखे।



तनाव मुक्त रहना :- तनाव, आधुनिक जीवन शैली में स्वास्थ्य के खराब होने की एक बड़ी वजह सिद्ध हो रही है। तनाव पूर्ण जीवन यापन हमारे शरीर के महत्वपूर्ण अंगों जैसे कि हृदय व मस्तिष्क इत्यादि पर अवांछित दबाव डालता है जिसके कारणवश आधुनिक काल में मानव शरीर बहुत से रोगों से ग्रसित होता जा रहा है। आमतौर पर यह माना गया है कि सफल जीवन यापन के लिए जीवन में एक सीमित मात्रा में तनाव मौजूद रहना अच्छा होता है क्योंकि यह हमारे दैनिक जीवन में हमें अपने ध्येय



प्राप्त करने के प्रति समय-समय पर सजग व सचेत करता है जिसकी मदद से हम अपने जीवन के ध्येयों को प्राप्त करने हेतु अग्रसर रहते हैं। परंतु, जब यही दबाव अनजाने में हम पर हावी होने लगता है तो इसका बुरा स्वरूप सामने आता है। अवांछित दबाव से अपने आप को बचाने के लिए हमें अपने आप को अनावश्यक प्रतिस्पर्धाओं व ईर्ष्या से दूर रखना चाहिए। संतोष धन को एक सफल व सार्थक जीवन का अहम अंग माना गया है। हमें अपने मन को वश में रख कर संतोष व संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए। याद रहे कि जो भी हमारे भाग्य में लिखा

है, वह सही समय पर हमें मिलेगा ही। अतः अनावश्यक इच्छापूर्ति के लिए इधर-उधर की दौड़ व्यर्थ है और दबाव का कारण बनती है। जीवन से मानसिक व शारीरिक दबाव को दूर करने के लिए हम योग व ध्यान जैसी क्रियाओं को अपने दैनिक जीवन का एक नियमित हिस्सा बना सकते हैं। हर एक दिन कुछ समय प्रकृति के दायरे में अकेले बिताना व आत्म मंथन करना भी दबाव कम करने में सहायक सिद्ध होता है। दैनिक जीवन के दबाव को कम करने के लिए आप कोई हॉबी रख सकते हैं या कोई पालतू जानवर व पक्षी भी पाल सकते हैं।

अच्छी संगत में रहना:- जैसा कि आप सब को ज्ञात है, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस नाते मनुष्य को मनुष्य का साथ भाता है व सुख प्रदान करता है। समान प्रकृति वाले मनुष्यों के साथ हंसना-बोलना व

समय व्यतीत करना मनुष्य की चाहत होती है। इसमें कोई बुरी बात भी नहीं है और यह जीवन में एक परिपूर्णता का एहसास प्रदान करती है परंतु जब कभी-भी किसी मनुष्य की संगत बुरी हो जाती है तो इसके दुष्प्रभाव भी मानव शरीर में जल्दी ही दिखने लगते हैं। बुरी संगत में पड़ कर एक सफल जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य भी पतन की ओर अग्रसर हो जाता है। समय के हिसाब से बुरी आदतों के हानिकारक प्रभाव मानव शरीर में उत्पन्न होने लगते हैं जो कि उसकी काया ही नहीं बल्कि आत्मा को भी बरबाद कर देते हैं। अतः हमें बुरी संगत व बुरी आदतों से अपने आप को हर हालत में बचाए रखना चाहिए और ऐसी कुप्रवृत्ति के लोगों से दूर रहना चाहिए। अतः हमारे बेहतर स्वास्थ्य व शरीर के लिए हमारा परम दायित्व बनता है और हमें इसका कड़ाई से पालन करना चाहिए।

मित्रो, अंत में मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि एक स्वस्थ शरीर व अच्छे विचार ही एक स्वस्थ समाज व सशक्त राष्ट्र की नींव होते हैं। अतः उम्मीद करता हूँ कि आप अपने व अपने प्रियजनों के अच्छे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होकर इन नियमों का पालन करेंगे ताकि आप का जीवन स्वस्थ व सफल रूप से व्यतीत हो।

➤ दीपक आशीष कौल
निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

में क्यूँ



जीवन की सूनी राहों पर
आशाओं की पतवारों से,
कदम-कदम उन पर चलकर
जब लक्ष्य नज़र आ जाता है,
तब और तेज़ चलना होता
में क्यूँ धीमा हो जाता हूँ। मैं क्यूँ--
जब मुझे कोई बुलाता है
आशा का दीप जलाता है,
वह सपना-सा लगता मुझको
विश्वास नहीं हो पाता है,
फिर चमत्कार की आशा में
क्यूँ घी के दीप जलाता हूँ। क्यूँ घी--
में सोया जागा फिर सोया
रातों में जी भर कर रोया,
इस आशा में कि कोई आयेगा
जो ढाँढस मुझे दिलाएगा,
वो आया मैंने देखा भी
क्यूँ विश्वास नहीं कर पाता हूँ। क्यूँ विश्वास.....
इस भीड़ में अजब खामोशी है
किसी संकट की आहट तो नहीं
ये सोचकर ही मैं डरता हूँ
कही कोई विकराल, रूप ना ले,
जब कहीं देखता तांडव सा
में क्यूँ चुप सा रह जाता हूँ। मैं क्यूँ.....
ये आस हमेशा जीवन में
कोई शांति दूत तो आयेगा
आज नहीं तो कल ही सही
जीवन की राह दिखाएगा,
बस बुद्ध मिलन की आशा ही
में क्यूँ ना बुद्ध हो जाता हूँ। मैं क्यूँ.....
कुछ सपने हैं, कुछ अरमां हैं
जीवन मे कुछ कर जाना हैं,
हम सक्षम हैं, हम शिक्षित हैं

और भरम जाल में कुंठित हैं
ना होकर भी वो साथ मेरे
में क्यूँ पीछे रह जाता हूँ। मैं क्यूँ.....
जब कोई गरीब सिसकता है
असमर्थता से ही लड़ता है,
जब रोजी-रोटी पाना भी
उसे अस्मिता से भारी लगे,
वह चीखे चिल्लाए और रोए,
में क्यूँ ना कुछ कर पाता हूँ। मैं क्यूँ.....
जीवन पाया सच्चाई भी,
बुद्ध धर्म्य दीक्षाएं भी,
जीवन इतना आसान नहीं,
कुछ कठिन कर्म तो करना है,
जब दिव्य दीक्षा कहे मुझे,
में क्यूँ भ्रमित जो जाता हूँ। मैं क्यूँ.....
जब कर्म धर्म पर आश्रित हो,
फिर कर्म - कर्म परिभाषित क्या,
हर कर्म- धर्म निर्देशित हो,
फिर स्वयं सोच का मतलब क्या,
जब नहीं पता जाना है कहां,
में क्यूँ पीछे लग जाता हूँ। मैं क्यूँ.....
में उसका हूँ वह मेरा है,
यह भ्रम जाल टूटा ही नहीं
कब तक उसको मैं अपना कहूँ,
उसके कितने सितम सहूँ,
इतनी पीड़ा के बाद भी चुप
में क्यूँ ना रुध हो पाता हूँ। मैं क्यूँ
में छोटा हूँ वो बड़ा सही,
जीवन की यह सच्चाई नहीं,
गैरों में ढूँढा है अपना,
अपनों में गैर नहीं मिलते
अपने गैरों की उलझन में
में क्यूँ भ्रमित हो जाता हूँ। मैं क्यूँ.....

➤ ई. राम अवतार "भारती"
उप निदेशक (परियोजना-III)

टीका



आज सर्वत्र टीका की चर्चा है। जिन्होंने एक टीका लिया वह भी दो अंगुलियों से वी बनाकर दिखा रहे हैं और जिन्होंने दो टीके लगावाए वह भी दोनों अंगुलियां उठाकर विजयी मुद्रा में दिख रहे हैं। विजयी मुद्रा हो भी क्यों न ? जिस महामारी ने इतने लोगों की जान ले ली है, टीका लेने से कम से कम एक सुरक्षा कवच तो प्राप्त हो जाएगा। आगे प्रभु की इच्छा। बगैर टिकट जैसे यात्रा मुश्किल हो जाती है, वैसे ही टीका लेने के बाद वायरस की यात्रा दुर्गम हो जाती है। उसे प्रवेश निषेध का बोर्ड लिखा नजर आता और वह उल्टे पांव लौट जाता है।

वैसे तो टीका लगाने की परंपरा हमारे समाज में आदिकाल से चली आ रही है। जब भी हम लोग घर से बाहर निकलते हैं तो हमारे बड़े-बुजुर्ग, माता-बहन हमारे मस्तक पर तिलक लगाकर भेजते हैं ताकि हमारी यात्रा निर्बाध रहे, वह सकुशल संपन्न हो सके। वैसे ही हम लोग कोरोना का टीका लेकर कोरोना वायरस से सुरक्षित हो जाने का उपाय कर रहे हैं। छोटे बच्चों को हम काला टीका लगाते हैं ताकि उसको किसी की नजर न लगे। शादी-विवाह में महिलाओं को मांग टीका दिया जाता है। विशेष अवसरों पर बड़े प्यार से महिलाएं टीका पहनती हैं। जो छात्र जिस विषय में कमजोर होते हैं वह उस विषय की टीका-कुंजी खरीदते हैं ताकि अच्छे अंक लाए जा सके। उसी तरह, जो बीमारी बड़े पैमाने पर फैलती है और संक्रामक होती है, उसके लिए टीका की व्यवस्था की जाती है, ताकि बीमारी के फैलाव को रोका जा सके। महत्वपूर्ण पुस्तकों की टीका कई लोगों के द्वारा लिखी जाती है और फिर टीका पर टीका -टिप्पणी होने लगती है। कोरोना के भी कई टीकों जैसे कोविशील्ड, कोवैक्सीन एवं स्पुतनिक पर भी पूरी दुनिया में खूब चर्चा हो रही है।

मेडिकल टीका के अतिरिक्त, समाज में अन्य प्रकार का टीका भी प्रचलन में है, जैसे ऑफिस में काम नहीं हो रहा है तो घूस का टीका लगा दीजिए, काम हो जाएगा। समय की मांग के अनुरूप, देश में टीकाकरण बिल्कुल व्यवस्थित मार्ग पर अग्रसर है, इसमें कोई वीआईपी व्यवस्था नहीं है। पात्रों की चयन आवश्यकतानुसार किया जाता है। मसलन डाक्टर, पैरामेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मी सबसे ज्यादा जोखिम वाले क्षेत्र में हैं, हमेशा कोविड मरीजों के बीच रहते हैं। फिर पुलिस एवं सुरक्षा बलों की बारी आती है। वरिष्ठ नागरिकों के बाद धीरे-धीरे युवा वर्ग टीकाकरण के दायरे में लाया जा चुका है। टीका सिर्फ ड्राप एवं सुई के रूप में ही नहीं होता है। सावधानियां भी टीका वैक्सीन के रूप में काम करती है, जैसे मास्क और दो गज की दूरी। पहले स्कूल में भी लोग टीकाकरण के लिए आते थे। जैसे ही विद्यालय में मेडिकल स्टाफ आता था, वैसे ही विद्यालय में भगदड़ मच जाती थी। कोई चार दीवारी कूदकर भागता तो कोई डेस्क के नीचे छिप जाता था। स्थिति यह है कि आज टीका के लिए लोग तूफान मचाए हुए हैं और पूछ रहे हैं कि मेरा नंबर कब आएगा। टीका पर चाहे जितनी भी टीका-टिप्पणी हो जाए, लेकिन एक बात तो तय है यदि हम टीका लेते हैं तो हमारी इम्यूनिटी में टिकाऊपन आएगा, जो हमें इस महामारी से बचाएगा।

➤ चन्द्र पाल सिंह यादव
सहायक निदेशक (पी-1)

बेहतर है कि...

अंधेरा घना है, कोसने से क्या होगा
बेहतर है कि....
एक दिया जलाया जाए।



प्रदूषण बहुत है, घर में बैठे रहने से
बेहतर है कि....
एक पौधा लगाया जाए।

अशिक्षा का वर्चस्व यहाँ, किसी को दोष देने से
बेहतर है कि....
एक बच्चे को साक्षर बनाया जाए ।

नारी सम्मान करो, विज्ञापन देने से क्या होगा
बेहतर है कि....
अपनी संतान को संस्कार सिखाया जाए।

चलो वृद्धाश्रम में कुछ दान करें
बेहतर है कि....
उनको सेवा और समय दिया जाए।

गरीबी अभिशाप है मजाक न उड़ाएं।
बेहतर है कि
उन्हे सहारा दिया जाए।

भ्रष्टाचार घनघोर है
बेहतर है कि....
स्वयं में ही सुधार किया जाए।

सतर्कता, ईमानदारी का शोर यहाँ
बेहतर है कि....
समाज को जागरूक किया जाए।

आधुनिकीकरण, आर्थिक विकास की दौड़ यहाँ
बेहतर है कि....
गाँवों को भी सड़कों से जोड़ा जाए।

➤ अनु ठाकुर,
सीनियर डेवलपर (टी.सी.आई)-

बालक ध्रुव के ध्रुव तारा बनने की



स्वयंभुव मनु और शतरूपा के दो पुत्र थे प्रियवत और उत्तानपाद। उत्तानपाद की सुनीति और सुरुचि नामक दो पत्नियां थीं। राजा उत्तानपाद को सुनीति से ध्रुव और सुरुचि से उत्तम नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। यद्यपि सुनीति बड़ी रानी थी परन्तु उत्तानपाद का प्रेम सुरुचि के प्रति अधिक था। एक बार सुनीति का पुत्र ध्रुव अपने पिता की गोद में बैठा खेल रहा था। इतने में सुरुचि वहां आ पहुंची। ध्रुव को उत्तानपाद की गोद में खेलते देख उसका पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। सौतन के पुत्र को अपने पति की गोद में वह बर्दाश्त न कर सकी। उसका मन ईर्ष्या से जल उठा। उसने झपट कर बालक ध्रुव को राजा की गोद से खींच लिया और अपने पुत्र उत्तम को उसकी गोद में बिठा दिया तथा बालक ध्रुव से बोली, अरे मूर्ख राजा की गोद में वही बालक बैठ सकता है जो मेरी कोख से उत्पन्न हुआ हो। तू मेरी कोख से उत्पन्न नहीं हुआ है। इसलिए तुझे इनकी गोद में या राज सिंहासन पर बैठने का कोई अधिकार नहीं है। पांच वर्ष के ध्रुव को अपनी सौतेली मां के व्यवहार पर क्रोध आया। वह भागते हुए अपनी मां सुनीति के पास आए तथा सारी बात बताई। सुनीति बोली, बेटा तेरी सौतेली माता सुरुचि से अधिक प्रेम के कारण तुम्हारे पिता हम लोगों से दूर हो गए हैं।

तुम भगवान को अपना सहारा बनाओ। माता के वचन सुनकर ध्रुव को कुछ ज्ञान उत्पन्न हुआ और वह भगवान की भक्ति करने के लिए पिता के घर को छोड़ कर चल पड़े। मार्ग में उनकी भेंट देवर्षि नारद से हुई। देवर्षि ने बालक ध्रुव को समझाया, किन्तु ध्रुव नहीं माना। नारद ने उसके दृढ़ संकल्प को देखते हुए ध्रुव को मंत्र की दीक्षा दी। इसके बाद देवर्षि राजा उत्तानपाद के पास गए। राजा उत्तानपाद को ध्रुव के चले जाने से बड़ा पछतावा हो रहा था। देवर्षि नारद को वहां पाकर उन्होंने उनका सत्कार किया। देवर्षि ने राजा को ढांडस बंधाया कि भगवान उनके रक्षक हैं। भविष्य में वह अपने यश को सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैलाएंगे। उनके प्रभाव से आपकी कीर्ति इस संसार में फैलेगी। नारद जी के इन शब्दों से राजा उत्तानपाद को कुछ तसल्ली हुई। उधर बालक ध्रुव यमुना के तट पर जा पहुंचे तथा देवर्षि नारद से मिले मंत्र से भगवान नारायण की तपस्या आरम्भ कर दी। तपस्या करते हुए ध्रुव को अनेक प्रकार की समस्याएं आईं परन्तु वह अपने संकल्प पर अडिग रहे। उनका मनोबल विचलित नहीं हुआ। उनके तप का तेज तीनों लोकों में फैलने लगा। ओम नमो भगवते वासुदेवाय की ध्वनि बैकुंठ में भी गूंज उठी। तब भगवान नारायण भी योग निद्रा से उठ बैठे। ध्रुव को इस अवस्था में तप करते देख नारायण प्रसन्न हो गए तथा उन्हें दर्शन देने के लिए प्रकट हुए। नारायण बोले, हे राजकुमार तुम्हारी समस्त इच्छाएं पूर्ण होंगी।

तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न होकर मैं तुम्हें वह लोक प्रदान कर रहा हूं, जिसके चारों ओर ज्योतिष चक्र घूमता है तथा जिसके आधार पर सब ग्रह नक्षत्र घूमते हैं। प्रलयकाल में भी जिसका कभी नाश नहीं होता। सप्तऋषि भी नक्षत्रों के साथ जिस की प्रदक्षिणा करते हैं। तुम्हारे नाम पर वह लोक ध्रुव लोक कहलाएगा। इस लोक में छत्तीस सहस्र वर्ष तक तुम पृथ्वी पर शासन करोगे। समस्त प्रकार के सर्वोत्तम ऐश्वर्य भोग कर अंत समय में तुम मेरे लोक को प्राप्त होगे। बालक ध्रुव को ऐसा वरदान देकर नारायण अपने लोक लौट गए। नारायण के वरदान स्वरूप ध्रुव समय पाकर ध्रुव तारा बन गए।

➤ राहुल चराया, सी.ए.,
वित्त एवं प्रशा.

गुरु का स्थान



एक राजा था, उसे पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। एक बार उसने मंत्री परिषद के माध्यम से अपने लिए एक शिक्षक की व्यवस्था की। शिक्षक राजा को पढ़ाने की लिए आने लगा। राजा को शिक्षा ग्रहण करते हुए कई महीने बीत गए लेकिन राजा को कोई लाभ नहीं हुआ। गुरु तो रोज खूब मेहनत करते थे परन्तु राजा को शिक्षा का कोई भी फायदा नहीं हो रहा था। राजा बड़ा परेशान था। गुरु की प्रतिभा और योग्यता पर सवाल उठाना भी गलत था, क्योंकि वह बहुत ही प्रसिद्ध और योग्य गुरु थे। आखिर में एक दिन रानी ने राजा को सलाह दी कि राजन आप इस सवाल का जवाब गुरु जी से ही पूछकर देखिए। राजा ने एक दिन हिम्मत करके गुरु जी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी कि हे गुरुवर क्षमा कीजियेगा, मैं कई महीनों से आपसे शिक्षा ग्रहण कर रहा हूँ पर मुझे इसका कोई लाभ नहीं हो रहा, ऐसा क्यों है?

गुरु जी ने बड़े ही शांत स्वर में जवाब दिया, राजन, इसका कारण बहुत ही सीधा-सा है। राजा ने विनती की, गुरुवर कृपा कर आप शीघ्र इस प्रश्न का उत्तर दीजिये। गुरु जी ने कहा, “राजन बात बहुत छोटी है, परन्तु आप अपने बड़े होने के अहंकार के कारण इसे समझ नहीं पा रहे हैं और परेशान और दुखी हैं। माना कि आप एक बहुत बड़े राजा हैं, आप हर दृष्टि से मुझसे पद और प्रतिष्ठा में बड़े हैं, परन्तु यहाँ पर आपका और मेरा रिश्ता एक गुरु और शिष्य का है। गुरु होने के नाते मेरा स्थान आपसे ऊँचा होना चाहिए, परन्तु आप स्वयं ऊँचे सिंहासन पर बैठते हैं और मुझे अपने से नीचे के आसन में बैठते हैं। बस यही एक कारण है। इससे न तो आपको कोई शिक्षा प्राप्त हो रही है और न ही कोई ज्ञान मिल रहा है। आपके राजा होने के कारण मैं आपसे यह बात नहीं कह पा रहा था। कल से अगर आप मुझे ऊँचे सिंहासन पर बैठाएं और स्वयं नीचे आसन पर बैठे तो कोई कारण नहीं कि आप शिक्षा ग्रहण न कर पाएं।” राजा की समझ में सारी बात आ गई थी और उसने तुरंत अपनी गलती को सुधारा और गुरुवर से उच्च शिक्षा प्राप्त की।

इस छोटी-सी कहानी का सार यह है कि हम रिश्ते, नाते या धन वैभव में किसी से भी कितने ही बड़े क्यों न हो। हम अगर अपने गुरु को उसका उचित स्थान नहीं देते तो हमारा भला होना मुश्किल है और यहाँ स्थान का अर्थ सिर्फ ऊँचा या नीचे बैठने से नहीं है। इसका सही अर्थ है कि हम अपने मन में गुरु को क्या स्थान दे रहे हैं, क्या हम उनको सम्मान दे रहे हैं या स्वयं के ही श्रेष्ठ होने का घमंड कर रहे हैं? अगर हम अपने गुरु के प्रति यह भावनाएं रखेंगे तो हमें उनकी योग्यताओं और अच्छाइयों का कोई लाभ नहीं मिलने वाला और अगर हम उनका आदर करेंगे, उन्हें महत्त्व देंगे तो उनका आशीर्वाद हमें सहज ही प्राप्त होगा।

➤ नवीन चन्द्र जोशी
कार्यकारी सहायक (पी-1)

रावण की सीख



आधी रात को अचानक राहुल की नींद खुली तो रावण के पुतले की याद आई। उसने धीरे से दरवाजा खोला और घर के बाहर खुले में निकल आया। टहलते हुए उस मैदान पर पहुंच गया, जहां दशानन का विशाल पुतला आसमान छूने का प्रयास करता प्रतीत हो रहा था। राहुल को आश्चर्य हुआ। रावण जाग रहा था। अतः उसने पूछ लिया, क्यों रावण महाशय, अपने दहन के भय से नींद आखों से गायब है ? रावण ने उत्तर दिया, नहीं बच्चे मुझे अपनी नियति का पता है। मेरी सांसे बंद होने में अभी कुछ घंटे बाकी है। दशानन ने साधारण भाव से कहा। राहुल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया - मैंने सुना है, आखिरी समय में भगवान राम की प्रेरणा से लक्ष्मण जी भी आपसे ज्ञान की बातें सीखने पहुँचे थे? हां, आए तो थे, रावण बोला - पर उनको सिखाने की मेरी क्या औकात? यह तो उनका बड़प्पन था, जो मेरे पास आए, रावण ने सकुचाते हुए स्वीकारा। फिर तो महाशय जी आपको मुझे भी कुछ सीख देनी पड़ेगी, राहुल ने कहा। तुम दया करो, वह जमाना और था। आज तो ज्ञान का विस्फोट हो गया है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक स्रोत सहजता से उपलब्ध हैं। इंटरनेट तो ज्ञान का अथाह सागर है, रावण ने बताया। राहुल बोला, माना कि यह सब है, फिर भी अपने मुँह से कम से कम एक सीख अवश्य देनी होगी, वह विनम्रतापूर्वक बोला। रावण सोच में पड़ गया। इतने सारे विषय हैं कि किस बारे में तुम्हें बताऊँ, समझ नहीं आ रहा है। राहुल बोला आप तो प्रख्यात पंडित हैं, वेदों के ज्ञाता हैं, फिर भी मेरे विद्यार्थी जीवन के लिए जो आप उचित समझें, उसमें से कुछ बता दीजिए, राहुल बोला।

रावण ने गंभीर स्वर में कहा, हालांकि जो मैं बताने जा रहा हूँ, वह कोई नई बात नहीं है, लेकिन आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण हैं। देखो वत्स, अच्छे कामों को टालना उचित नहीं होता। एक बार टालने के बाद उसके लिए अवसर न आएगा, रावण ने बताया।

राहुल बोला, हां मेरे दादाजी भी कहते हैं अवसर हर जगह उपलब्ध है, दिमाग और आंखे खुली रखने की जरूरत है। हमेशा ध्यान रखो कि एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरा तुरंत खुल जाता है। रावण बोला बेटा मैंने सोचा था नरक का द्वार बंद करवा दूँगा, समुद्र का खारा पानी निकाल कर उसमें दूध भरवा दूँगा, धरती से स्वर्ग तक सीढ़ियां बनवा दूँगा पर मैं इन कामों को टालता रहा और कल कभी आता नहीं। इसलिए समय का सदुपयोग करो, किसी भी काम को कल पर टालो नहीं। रावण ने अपनी गलती पर पछतावा जताते हुए समझाया। राहुल बोला मेरे दादाजी कहते हैं, समय निरंतर दौड़ रहा है। दुनिया के तमाम पैसे खर्च कर भी बीता हुआ एक पल भी पुनः खरीदा नहीं जा सकता। बिल्कुल ठीक कहते हैं कि अच्छे कामों को टालना बुरा है और बुरे कामों को टालना अच्छा। सीताजी के हरण में मैंने तत्परता दिखाई, जबकि वह मुझे टालना चाहिए था। रावण ने अपनी करनी पर दुख प्रकट किया।

धन्यवाद, रावण जी आपकी यह सीख मैं आजीवन नहीं भूलूँगा और उससे लाभ उठाऊँगा। राहुल ने वादा किया और घर लौट आया।

➤ मोहित माथुर

कार्यकारी सहायक (तकनीकी)

यदि मेरे पंख होते



जब हम छोटे थे तब हमारे मन में एक सवाल आता था। आसमान को देख कर, यदि मेरे पंख होते तो क्या होता? अगर होते तो वो बड़े अनोखे होते। वो कभी न थमते, न कभी मुझे किसी के हाथ आते। बस उड़ा ले जाते मुझे जहाँ मेरा मन होता। जब स्कूल जाना होता, तो किसी से बिना बताये ले जाते मुझे ये उस पार्क में जहाँ सबसे ज्यादा झूले होते और झूलने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार भी न करना पड़ता क्योंकि तब सब बच्चे स्कूल में पढ़ रहे होते। ये पंख मिल जाते तो हवाई जहाज़ का सफर मुफ्त में होता। पत्रिका में जिस देश की तस्वीर थी, वो देश देख लिया होता। हवा मेरा ठिकाना होती, बस पैर कभी ज़मीन पर न टिकते। माँ को रोज़ कहीं न कहीं घुमा आते मैं और मेरे ये पंख। अपने प्रिय मित्र को उसके जन्म दिन पर एक दिन के लिए तोहफ़े में इन पंखों की उड़ान दे दी होती। ठंडी हवाओं में बस मैं और मेरी उड़ान होती। सड़क पार करने में डर नहीं लगता क्योंकि सड़क पार ही नहीं करनी पड़ती। बस हवा में हर जगह पहुँच होती मेरी। रुई जैसे बादल को अपने हाथों से छूने को मिलता। किसी बादल को आइसक्रीम तो किसी को साइकिल बना लेते हाथों से।

पंख का संबंध आत्मविश्वास (हौसलों) से है। वास्तव में मन के पंखों की काल्पनिक उड़ान से ही हम वांछित मुकाम हासिल करते हैं। यही वह पंख है जो असंभव को संभव बनाने का संबल प्रदान करते हैं। यह तो यथार्थ का एक पहलू हुआ। यदि हम निबंध या वाक्य रचना की बात करें तो सहसा हमारा ध्यान पक्षियों की ओर केन्द्रित होता है। पौ-फटने से पूर्व जागरण, उनके मधुर कलरव से वातावरण में उत्पन्न ऊर्जा रूपी स्वर लहरियां हमें आशा की नित नई सुबह का आभास कराती हैं। व्यस्ततम दिनचर्या से उत्पन्न तनाव को खत्म कर नयी उमंग का संचार करती हैं। कोयल की कूक से पकते आम, बादलों को बरसने को विवश करता मयूर नृत्य, सारस बगुले की एकाग्रता, हंस का नीर-क्षीर विवेक, बया की वास्तुशिल्पी, बीजों का स्थानांतरण ताकि वह वृक्ष बन सकें जैसे अनेक पक्षियों के अथक परिश्रम हमें भी उसी तरह प्रेरित करते हैं। मानव जीवन में सीमा, बंधन, जात-पात जैसी विकृतियों से परे समस्त जीवों के स्वतंत्र उड़ान को पुष्ट करती हैं किन्तु अब ये पक्षी आधुनिक मानव के इस संसार से ऊब चुके हैं। उन्हें वृक्ष की शाखाओं की जगह विद्युत तार, कंक्रीट के जंगलों में बसेरा बनाने को विवश होना पड़ रहा है। आधुनिकता की दौड़ से उत्पन्न स्मार्ट सिटी की अवधारणा में लुप्त वृक्ष, नदी, तालाब, पोखर, कुएं, बावड़ी जैसे जलाशयों के अभाव में प्यासे रहने को विवश ये पक्षी दूरसंचार टेलीफोन, मोबाइल के बड़े-बड़े टावरों से उत्पन्न तरंगों से भ्रमित हो अपना मूल स्वरूप खो रहे हैं। ऐसे में हम लुप्त होते पंख हमें जहां ले जा रहे हैं, शायद वह मंजिल कभी प्राप्त हो सकेगी।

आज ऐसे लगता है, है तो पंख मेरे पास। मेरा ज्ञान, मेरी सोच। मैं सिर्फ शरीर तो नहीं, आत्मा हूँ। मेरे पंख मेरा ज्ञान और मेरी सोच ही तो हैं जो न जाने कहाँ-कहाँ ले जाते हैं मुझे। कितना कुछ मुझे दिखाते हैं। ज्ञान है तो, समझ होती है, हमारे कदम बस बढ़ते ही रहते हैं। पंखों की शक्ल में लगे हैं हर वक्रत, जो कोई काट नहीं सकता, अलग नहीं कर सकता। न तो ये तोड़े जा सकते हैं, ना ही मरोड़े जा सकते हैं क्योंकि कभी किसी के हाथ ही नहीं आ सकते। देश - विदेश में ले जा सकते हैं।

सोच ही तो है, जितनी बड़ी, उतना ऊँचा ले जाती है। मेरे पंख मेरे पास ही हैं। दिखते तो नहीं पर मेरे साथ ही हैं। बस ये और बड़े हो जाएँ और मुझे हर जगह ले जाए।

(विजय इंगले)
प्रोग्रामर

प्रदूषण पर लाकडाउन



मनुष्य इस पृथ्वी पर रहने वाला एकमात्र ऐसा जीव है जो कि पृथ्वी के तमाम संसाधनों का बेतरतीब तरीके से दोहन करता है। एक वक्त ऐसा भी था जब इस पृथ्वी पर इंसान तो थे लेकिन वे एकदम सीमित संख्या और स्थान पर निवास करते थे जिसके कारण पृथ्वी का संतुलन बना हुआ था परन्तु समय के साथ खेती की खोज हुई और मनुष्यों ने एक स्थान पर रहना शुरू कर दिया और उद्योगों आदि की स्थापना की। विभिन्न धातुओं की खोज के साथ ही मनुष्य की महत्वाकांक्षा बढ़ती चली गयी और मनुष्यों ने पृथ्वी का दोहन करना शुरू कर दिया। इसी दोहन के कारण मौसम में कई परिवर्तन आए जिसने हजारों बीमारियों को जन्म दिया। इन्हीं बीमारियों ने ही इस महामारी का रूप ले लिया। औद्योगीकरण और वैश्वीकरण ने खाद्यान से लेकर जल तक को अशुद्ध कर दिया, जिसने बीमारियों को निमंत्रण देने का कार्य किया। इनमें से ही एक बीमारी जो हाल ही में पृथ्वी पर आई है, उसका नाम है कोरोना वायरस! इस बीमारी से बचने के लिए पूरे विश्व में प्रारम्भ में एक ही तरीका अपनाया गया और वो था लाकडाउन। इस महामारी के चलते सब ठप्प हो गया। लाकडाउन ने दुनिया भर के करोड़ों लोगों को घर में कैद करके रख दिया परन्तु यकीनन इस शांति ने हमारे पर्यावरण को भी बदल दिया। प्रकृति साफ हुई और नदियां, समुद्र एवं जीव-जंतु, सभी के जीवन में एक हरियाली लौटी। हर कोई एक दम शुद्ध हवा से सांस ले रहा था। पर्यावरण की चिंता करने वाले और उसे लेकर अपने स्तर पर लगातार प्रयास करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए लाकडाउन का यह समय आंतरिक खुशी प्रदान करने वाला रहा है। वैश्विक आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले 60 वर्षों में किए गए तमाम प्रयासों और जलवायु परिवर्तन के असंख्य वैश्विक समझौतों के बावजूद पर्यावरणीय स्थिति में वो सुधार नहीं हो पाया था जो उन दिनों में वैश्विक लाकडाउन के चलते हुआ है। अब इस संदर्भ में मेरे मन में एक सवाल उठता है वह यह है कि क्या प्रदूषण से मनुष्य महामारी के बहाने नहीं बल्कि अपने स्तर पर, आदतों द्वारा और उसका संरक्षण करते हुए नहीं बचा सकता? क्या पर्यावरण को बचाने के लिए प्रदूषण पर हमेशा के लिए लाकडाउन नहीं लग सकता? क्यों, मनुष्य केवल पर्यावरण को बचाने के लिए इस तरह की स्थिति के लिए बाध्य है। आज हम देखें तो हर इंसान अपने जीवन की कार्यशैली में निरंतर दौड़ रहा है किसी के पास इतना समय नहीं है कि अपने कल को सुधारने के लिए कुछ समय पर्यावरण के संरक्षण में भी लगाएँ। जिस तरह हर मनुष्य अपने शरीर को बीमारियों से बचाने के लिए हर रोज साफ-सफाई रखता है तो पर्यावरण को बचाने के लिए भी अपने आसपास साफ-सफाई क्यों नहीं कर सकता? यदि प्रत्येक मनुष्य प्रति वर्ष एक-एक वृक्ष भी लगाए और उसके सम्पूर्ण जीवन की जिम्मेदारी ले तो मात्र इतने प्रयास से ही पर्यावरण को बचाने के लिए लाकडाउन की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

➤ प्रदीप चितौड़,
लेखापाल

पन्ना धाय



पन्ना धाय राणा साँगा के पुत्र राणा उदयसिंह की धाय माँ थीं। वीरांगना पन्ना धाय का जन्म हरचंद जी हांकला (गुर्जर) के घर चित्तौड़गढ़ के समीप पाण्डोली गांव में 1490 में हुआ था। कमेरी गांव के चौहान गोत्रीय लालाजी गुर्जर के पुत्र श्री सूरजमल से पन्ना का विवाह हुआ। पन्ना का पति सूरजमल एक वीर सैनिक था और चित्तौड़ राज्य में सेवारत था।

राणा साँगा के पुत्र उदय सिंह को माँ के स्थान पर दूध पिलाने के कारण पन्ना 'धाय माँ' कहलाई थी। पन्ना का पुत्र चन्दन और राजकुमार उदय सिंह साथ-साथ बड़े हुए थे। उदय सिंह को पन्ना ने अपने पुत्र के समान पाला था।

चित्तौड़ का शासक, दासी का पुत्र बनवीर बनना चाहता था। उसने राणा के वंशजों को एक-एक कर मार डाला। बनवीर एक रात महाराजा विक्रमादित्य की हत्या करके उदय सिंह को मारने के लिए उसके महल की ओर चल पड़ा। एक विश्वस्त सेवक द्वारा पन्ना धाय को इसकी पूर्व सूचना मिल गई। पन्ना राजवंश और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग थी व उदय सिंह को बचाना चाहती थी। उसने उदय सिंह को एक बांस की टोकरी में सुलाकर उसे झूठी पत्तलों से ढककर एक विश्वास पात्र सेवक के साथ महल से बाहर भेज दिया। बनवीर को धोखा देने के उद्देश्य से अपने पुत्र को उदय सिंह के पलंग पर सुला दिया। बनवीर रक्तंजित तलवार लिए उदय सिंह के कक्ष में आया और उसके बारे में पूछा। पन्ना ने उदय सिंह के पलंग की ओर संकेत किया जिस पर उसका पुत्र सोया था। बनवीर ने पन्ना के पुत्र को उदय सिंह समझकर मार डाला। पन्ना अपनी आँखों के सामने अपने पुत्र के वध को अविचलित रूप से देखती रही। बनवीर को पता न लगे इसलिए वह आंसू भी नहीं बहा पाई। बनवीर के जाने के बाद अपने मृत पुत्र की लाश को चूमकर राजकुमार को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए निकल पड़ी। स्वामिभक्त वीरांगना पन्ना धन्य हैं, जिसने अपने कर्तव्य-पूर्ति में अपनी आँखों के तारे पुत्र का बलिदान देकर मेवाड़ राजवंश को बचाया।

पुत्र की मृत्यु के बाद पन्ना उदय सिंह को लेकर बहुत दिनों तक शरण के लिए भटकती रही। कुम्भलगढ़ में उसे शरण मिल गयी। उदय सिंह किलेदार का भांजा बनकर बड़ा हुआ। तेरह वर्ष की आयु में मेवाड़ी उमरावों ने उदय सिंह को अपना राजा स्वीकार कर लिया और उसका राज्याभिषेक कर दिया। उदय सिंह 1542 में मेवाड़ का वैधानिक महाराणा बन गया।

देवीसिंह गुर्जर,

निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

नारी और शिक्षा



नर और नारी समाज के दो पहिए हैं किसी एक के भी अभाव में किसी स्वस्थ समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। कोई भी समाज तभी प्रगति कर सकता है जब उस समाज के दोनों घटक स्वस्थ, समृद्ध और शिक्षित होंगे। एक उन्नत और प्रगतिशील समाज के लिए नर और नारी दोनों का समान रूप से शिक्षित होना अति आवश्यक है।

शिक्षा का नारी जीवन में विशेष महत्व है। एक कुशल गृहणी का शिक्षित होना अनिवार्य है। शिक्षा न केवल नारी को आत्मनिर्भर बनाती है बल्कि एक कुशल गृह संचालन के योग्य भी बनाती है। शिक्षा से नारी के अनेक गुणों का भी विकास होता है जैसे मस्तिष्क का विकास, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, गृह-प्रबंधन कौशल आदि।

शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है - मस्तिष्क का विकास। शिक्षा के द्वारा नारी के सोचने - समझने की क्षमता घर की चार दीवारी तक ही सीमित नहीं रहती अपितु उसमें सांसारिक ज्ञान का भी समावेश हो जाता है। शिक्षा के कारण नारी अपने रोजमर्रा के कार्यों को अधिक सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप से कर सकती है। वह किसी भी कार्य की लाभ-हानि पर अच्छी तरह विचार कर सकती है। वह अंधविश्वासों और रीति-रिवाजों के पीछे के कारणों की समीक्षा कर सकती है और उनको अपनी बुद्धि के अनुसार अपना अथवा उनका त्याग कर सकती है।

शिक्षा नारी को अपने स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक बनाती है। नारी का स्वस्थ होना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि एक स्वस्थ नारी ही स्वस्थ संतान को जन्म दे सकती है। स्वस्थ नारी घर के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य का ध्यान रख सकती है। शिक्षित नारी घर की सफाई के प्रति विशेष जागरूक होती है और इस प्रकार वह घर में स्वस्थ वातावरण को बनाये रखती है।

नारी के लिये शिक्षा इसलिये भी महत्वपूर्ण है ताकि वह अपने बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सके। बच्चा अपने जीवन का पहला और महत्वपूर्ण पाठ माँ की गोद में ही सीखता है। माँ बच्चे में अच्छी आदतों और अच्छे संस्कार उत्पन्न कर सकती है। इन सबके लिये नारी का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं, अतः उनका समुचित विकास होना अत्यंत आवश्यक है। एक स्वस्थ, शिक्षित और समझदार नारी ही हमारी भावी पीढ़ी को स्वस्थ, शिक्षित और अच्छा नागरिक बना सकती है। कहा भी गया है -

माँ पर पूत, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा

अतः, यदि माताएं शिक्षित होंगी तो बच्चे पर उसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। स्कूली शिक्षा का आधार भी मां से प्राप्त शिक्षा होती है। बच्चे की स्कूली शिक्षा पर मां की शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। एक शिक्षित माँ अपने बच्चे को बुरी आदतों से दूर रखती है। बुरी संगति से बचाती है और उसका मार्गदर्शन भी करती है।

शिक्षित नारी न केवल सामाजिक और पारिवारिक कार्य में सहयोग दे सकती है बल्कि वह अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर घर और बाहर का काम भी कर सकती है तथा परिवार की जरूरतों को पूरा कर सकती है। आज की बढ़ती महंगाई में एक आदमी की आय परिवार के लिए पर्याप्त नहीं होती। एक पत्नी इस कार्य में तभी मदद कर सकती है, जब वह शिक्षित हो। यदि नारी शिक्षित होगी, तो वह बुरे वक्त में नौकरी करके अपने बच्चों का पालन-पोषण कर सकती है।

अतः एक अच्छे स्वास्थ्य और संयुक्त समाज के लिए नारी का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। इसी कारण आज स्त्री - शिक्षा संबंधी अनेक अभियान चलाए जा रहे हैं ताकि नारी भी देश की प्रगति में अपना संपूर्ण योगदान दे सके।

➤ सेंटी एंथोनी

कार्यकारी सहायक (परियोजना-III)

अदनी सी नौकरी



कामयाब होने की चाहत में
सब धन-दौलत के लिए लड़े
इन अरमानों को पूरा करने
हम भी नौकर बनने निकल पड़े ।
शांत और सुखमय जीवन की
ख्वाहिश मन में दबी रही
धन अर्जन जीवन का लक्ष्य है
आगे कुछ ना गलत सही
जीवन भर का पढालिखा-
नौकरी पाने का जरिया था
भविष्य के सपने देख रहे थे
गुजरा कल एक दरिया था ।
कच्ची रोटी खाने को
हर दिन हम मजबूर हुए
पेट की भूख ना हुई खत्म
जिस दिन हम घर से दूर हुए ।
छोटी खुशियाँ पाने को
ना मेहनत से कतराते हैं
हम रहते हैं दूर घर से
भूखे ही सो जाते हैं ।
भोजनालय "माँ की रसोई"
अन्न एकमात्र सहारा है
अकेलेपन की आदत सी है
कमरे का चूहा भी अब प्यारा है ।
बचपन की सूनी गलियाँ
आज भी इंतजार करती हैं
हम भूल ना जाएँ उनको
इस बात से डरती हैं ।
अगर बेटियां घर का हीरा हैं
तो बेटे भी मोती हैं
कौन कहता है सिर्फ
बेटियां विदा होती है
बेटे भी कामयाब होने की चाहत में
घर से निकल जाते हैं ।

पूनम जे देसाई
कार्यकारी सहायक (पी-1)

माण्डव्य मुनि के शाप से यमराज का विदुर बनना ।



प्राचीन काल में माण्डव्य नाम के एक परम तपस्वी महात्मा थे। एक बार मुनि अपने आश्रम में एक वृक्ष के नीचे कठोर तपस्या कर रहे थे ! रात को उसी दिन चोरों ने राजा के यहां चोरी की। सिपाही चोरों को पकड़ने के लिए उनका पीछा करने लगे। अपनी जान बचाने के लिए चोरों ने सारा धन तथा आभूषण माण्डव्य मुनि के आश्रम में छिपा दिया और खुद भी वहां जाकर छिप गए। राजा के सिपाहियों ने मुनि से चोरों के विषय में पूछा मुनि अपने ध्यान में मग्न थे परन्तु मौनी होने के कारण मुनि ने कोई उत्तर नहीं दिया। सिपाही चोरों को आश्रम में ढूंढने लग गए। उन्होंने देखा एक किनारे कुछ व्यक्ति छुपकर बैठे हैं तथा उन्हें पकड़ लिया। चोरों ने भी मौन धारण कर लिया और कुछ नहीं बोले। सिपाहियों के पूछने पर कोई उत्तर नहीं मिला। कुछ देर बाद उन्हें धन और आभूषण भी उसी आश्रम में मिल गया। अब तो उन्होंने माण्डव्य मुनि को चोरों का सरदार समझकर चोरों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया। राजा की आज्ञा से सभी को शूली पर चढ़ा दिया गया। सब चोरों की मृत्यु हो गई किन्तु माण्डव्य मुनि अपनी घोर तपस्या के कारण जीवित रहे। यह समाचार सुनकर राजा ने अज्ञानवश हुए अपराध के लिए मुनि जी से क्षमा मांगी। मुनि ने राजा को सांत्वना देते हुए कहा— “इसमें आपका कोई दोष नहीं है, आपने अपने राजा का कर्तव्य निभाया। यहां सभी को अपने प्रारब्ध का फल भोगना ही पड़ता है।”

राजा ने मुनि के शरीर से शूली निकालने का बड़ा प्रयत्न किया परन्तु शूली की नोक उनकी गुदा से नहीं निकली। कोई उपाय न देखकर शरीर से बाहर शूली को कटवा दिया गया। माण्डव्य मुनि ने इस कठोर दण्ड के कारण काफी चिंतन-मनन किया—“मैंने बाल्यकाल से ही सदाचारपूर्वक तपस्या की, मन, वचन, कर्म से मैंने किसी को कष्ट नहीं दिया, फिर भी इतनी वेदना क्यों सहनी पड़ी? इस प्रश्न का पूर्ण उत्तर यमराज जी से ही पूछूंगा। मुनि बड़े क्रोधित होकर अपने तप के बल से यमलोक पहुंचे। यमराज ने मुनि का विधिवत सत्कार कर पधारने का कारण पूछा। क्रोधित होकर माण्डव्य मुनि ने कहा—“किस पाप के कारण मुझे शूली का दण्ड भोगना पड़ा और क्यों शूली की नोक शरीर से बाहर नहीं निकल रही है?” यमराज ने बड़े विनम्र भाव से उत्तर दिया “बचपन में आप कीट पतंगों को पकड़कर उनके पंख में तृण (कुशा की नोक) चुभोकर बिना निकाले ही छोड़ देते थे! उसी अपराध में आपको शूली का दण्ड भोगना पड़ा और उस कुशा की नोक पंख में ही धंसी रह जाती थी, इसलिए यह नोक भी आपके शरीर में मृत्यु के समय तक धंसी रहेगी।”

मुनि ने क्रोधवश में कहा—“बाल्यपन में अज्ञानवश हुए कार्य का इतना कठोर दंड? क्रोधवश में मुनि ने कहा यह तो शूद्र वृत्ति का काम है। अतः मैं आपको श्राप देता हूँ कि आपको सौ वर्ष तक पृथ्वी पर शूद्र योनि में अपना जीवन यापन करना पड़ेगा। यह सुनकर धर्मराज ने मुनि से कहा—“मुझे मेरे न्याय के लिए ऐसा घोर दण्ड?” अब तक मुनि का क्रोध शांत हो चुका था। उन्होंने कहा धर्मराज! आपको शूद्र योनि में तो जन्म लेना ही होगा परन्तु आप महामुनि व्यास से शुद्रा के गर्भ से जन्म लेंगे और राजकुल में आप श्रेष्ठ तथा माननीय होंगे। वहां भी आप परम नीतिवान और भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त होंगे। वही धर्मराज विदुर के नाम से पैदा हुए। उनकी विदुर नीति आज भी संसार में प्रसिद्ध है। सौ वर्ष के बाद विदुर ने अपना शरीर छोड़कर यमलोक जाकर अपना पद संभाल लिया।

➤ रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

खुरचन...



एक बूढ़ी माता मंदिर के सामने भीख माँगती थी। एक संत ने पूछा आपका -
बेटा लायक है, फिर यहाँ क्यों ?

बूढ़ी माता बोली बाबा, मेरे पति का देहांत हो गया है। मेरा पुत्र परदेस नौकरी के लिए चला गया। जाते समय मेरे खर्च के लिए कुछ रुपए देकर गया था, वे खर्च हो गये, इसीलिए भीख माँग रही हूँ।

संत ने पूछा - क्या तेरा बेटा तुझे कुछ नहीं भेजता ?

बूढ़ी माता बोली, मेरा बेटा हर महीने एक रंग-बिरंगा कागज भेजता है जिसे मैं दीवार पर चिपका देती हूँ।

संत ने उसके घर जाकर देखा कि दीवार पर 60 बैंक ड्राफ्ट चिपका कर रखे थे। प्रत्येक ड्राफ्ट 50,000/- रुपए की राशि का था।

पढ़ी-लिखी न होने के कारण वह नहीं जानती थी कि उसके पास कितनी संपत्ति है। संत ने उसे ड्राफ्ट का मूल्य समझाया।

हमारी स्थिति भी उस बूढ़ी माता की भाँति ही है।

हमारे पास धर्म ग्रंथ तो हैं, पर हम उनको माथे से लगाकर अपने घर में सुसज्जित कर के रखते हैं, जबकि हम उनका वास्तविक लाभ तभी उठा पाएँगे जब हम उनका अध्ययन, चिंतन-मनन करके उन्हें अपने जीवन में उतारेगें।

हम अपने धर्म ग्रंथों की वैज्ञानिकता को समझें, अपने त्योहारों की वैज्ञानिकता को समझें और अनुसरण करें।

➤ वीनू शर्मा

कार्यालय सहायक (परियोजना-III)

परमात्मा और किसान



एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया। कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए तो कभी ओले पड़ जाए। हर बार कुछ ना कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी खराब हो जाये। एक दिन बड़ा तंग आ कर उसने परमात्मा से कहा, देखिये प्रभु, आप परमात्मा हैं, लेकिन लगता है आपको खेती-बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है। एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये, जैसा मैं चाहूँ वैसा मौसम हो। फिर आप देखना मैं कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा। परमात्मा मुस्कुराए और कहा ठीक है, जैसे तुम कहोगे, वैसा ही मौसम दूंगा। मैं दखल नहीं करूंगा।

किसान ने गेहूँ की फसल बोई, जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी चाहा, तब पानी मिला। तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी तो उसने आने ही नहीं दी। समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी। किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को कि खेती कैसे करते हैं। बेकार ही इतने बरस हम किसानों को परेशान करते रहे।

फसल काटने का समय भी आया, किसान बड़े गर्व से फसल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा, एकदम से छाती पर हाथ रख कर बैठ गया। गेहूँ की एक भी बाली के अन्दर गेहूँ नहीं था, सारी बालियाँ अन्दर से खाली थी, बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा, प्रभु ये क्या हुआ?

तब परमात्मा बोले-ये तो होना ही था। तुमने पौधों को संघर्ष का ज़रा-सा भी मौका नहीं दिया। ना तेज धूप में उनको तपने दिया, ना आंधी, ओलों से जूझने दिया, उनको जरा भी किसी प्रकार की चुनौती का अहसास नहीं होने दिया। इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए। जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है, ओले गिरते हैं, तब पौधा अपने बल से ही खड़ा रहता है। वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है, वो ही उसे शक्ति देता है, ऊर्जा देता है, उसकी जीवटता को उभारता है। सोने को भी कुंदन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पिटने, गलने जैसी चुनौतियों से गुजरना पड़ता है, तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है, उसे अनमोल बनाती है।

उसी तरह जिंदगी में भी अगर संघर्ष ना हो, चुनौती ना हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अन्दर कोई गुण नहीं आ पाता। यह चुनौतियाँ ही हैं जो आदमी रूपी तलवार को धार देती हैं। उसे सशक्त और प्रखर बनाती हैं, अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनौतियाँ तो स्वीकार करनी ही पड़ेंगी, अन्यथा हम खोखले ही रह जायेंगे। अगर जिंदगी में प्रखर बनना है, प्रतिभाशाली बनना है तो संघर्ष और चुनौतियों का सामना तो करना ही पड़ेगा।

➤ प्राची गुसाईं

कार्यकारी सहायक परियोजना (III)

सकारात्मक सोच



सोच बोलने और देखने में बहुत ही छोटा शब्द प्रतीत होता है परन्तु गहराई से देखे तो यह शब्द पूरे मानव शरीर को नियंत्रित करता है। इस शब्द पर मानव का चरित्र ही नहीं पूरा व्यक्तित्व निर्भर करता है। इंसान के हाव-भाव क्रियाकलाप सोच द्वारा ही निर्धारित होते हैं। जिस प्रकार सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार सोच भी दो प्रकार की होती है—सकारात्मक और नकारात्मक। यदि सोच के आगे इनमें से कोई भी एक शब्द लग जाता है, तो पूरी सोच के मायने ही बदल जाते हैं।

बात करते हैं "सकारात्मक सोच की"। सकारात्मक यानि "पॉजिटिव"। ऐसा प्रायः ही देखा जाता है कि सकारात्मक सोच ही व्यक्ति की सफलता की सीढ़ी होती है। कोई भी कार्य व्यक्ति की सोच पर ही निर्भर करता है। सकारात्मक सोच द्वारा किया गया कार्य अवश्य ही सकारात्मक परिणाम के साथ पूर्ण होता है अन्यथा नकारात्मक सोच कार्य को पूर्ण नहीं होने देती। मानव के मस्तिष्क में नकारात्मक विचार उसके पूर्ण व्यक्तित्व को ही नकारात्मक रूप दे देते हैं। नकारात्मक विचार इंसान की सफलता में भी बाधक होते हैं। सकारात्मक सोच के बहुत सारे फायदे हैं। सर्वप्रथम तो सकारात्मक सोच वाले लोगों का चेहरा सदैव ही खिला-खिला रहता है।

जीवन में सभी सफलता पाना चाहते हैं परन्तु वे इस राज से अपरिचित हैं कि किस प्रकार से सफल बने। जब हम कोई भी कार्य करते हैं या करना चाहते हैं तो यह जाहिर सी बात है कि हमारे मन में कई तरह के विचार घूमते हैं। यह कार्य करें या न करें, होगा कि नहीं होगा आदि।

गत वर्ष, यानि 2020 इसका सबसे बड़ा उदाहरण रहा। जब कोरोना जैसी महामारी ने न केवल पूरे देश को बल्कि पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। आज भी विश्व इस महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी ने केवल शारीरिक तौर पर अपितु मानसिक तौर पर भी लोगों को बहुत प्रभावित किया जिसके चलते अधिकांश लोगों को मौत ने अपने आगोश में ले लिया और मानव जीवन की बहुत अधिक क्षति हुई परन्तु काफी लोगों ने इस महामारी से संघर्ष भी किया और एक सैनिक की तरह इस पर जीत भी हासिल की। इसका सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण कारण था उनकी सकारात्मक सोच। इस सोच के चलते उन्होंने नकारात्मकता को स्वयं के दिमाग पर हावी नहीं होने दिया और बीमारी पर भी विजय हासिल की।

हिम्मत हार जाना या थक कर बैठ जाना, कभी भी किसी समस्या का हल नहीं होता है। हर सफल व्यक्ति चाहता है कि वह लोगों में प्रिय भी हो। यह पूर्णतः सत्य है कि सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति लोगों में प्रिय होता है। इसलिए सोच का हमारे जीवन में बहुत ही अधिक महत्व है और हमारे जीवन का लक्ष्य भी उसी से सफल होगा। इसलिए कहा जाता है कि सोच रखो उच्च, न रखो तुच्छ विचार, सकारात्मक सोच से ही मिलेगी सफलता अपरंपार।

➤ रोहित कुमार,
निजी सहायक (परियोजना-II)



सुखी जीवन का रहस्य

एक महान संत हुआ करते थे जो अपना स्वयं का आश्रम बनाना चाहते थे जिसके लिए वे कई लोगों से मुलाकात करते थे। उनको एक जगह से दूसरी जगह यात्रा के लिए जाना पड़ता था। इसी यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात एक साधारण-सी कन्या विदुषी से हुई। विदुषी ने उनका स्वागत किया और संत से कुछ समय कुटिया में रुक कर आराम करने की याचना की। संत उसके मीठे व्यवहार से प्रसन्न हुए और उन्होंने उसका आग्रह स्वीकार किया।

विदुषी ने संत को अपने हाथों का स्वादिष्ट भोजन कराया और उनके विश्राम के लिए खटिया पर एक दरी बिछा दी और खुद फर्श पर टाट बिछा कर सो गईं। विदुषी को सोते ही नींद आ गई। उसके चेहरे के भाव से पता चल रहा था कि विदुषी चैन की सुखद नींद ले रही हैं। उधर संत को खाट पर नींद नहीं आ रही थी। उनको मोटे नरम गद्दे पर सोने की आदत थी जो उनको दान में मिला था। वो रात भर विदुषी के संबंध में सोच रहे थे कि वो कैसे इस कठोर जमीन पर इतने चैन से सो सकती हैं?

दूसरे दिन सवेरा होते ही संत ने विदुषी से पूछा कि – तुम कैसे इस कठोर धरा पर इतने चैन से सो रही थी? तब उसने बड़ी सरलता से उत्तर दिया – हे गुरुदेव, मेरे लिए ये मेरी छोटी-सी कुटिया एक महल के समान ही भव्य हैं। इसमें मेरे श्रम की महक हैं। अगर मुझे एक समय भी भोजन मिलता है तो मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ। जब दिन भर के कार्यों के बाद मैं इस धरा पर सोती हूँ तो मुझे माँ की गोद का आत्मीय अहसास होता है। मैं दिन भर के अपने सत्कर्मों का विचार करते हुए चैन की नींद सो जाती हूँ। मुझे अहसास भी नहीं होता कि मैं इस कठोर धरा पर हूँ।

यह सब सुनकर संत जाने लगे। तब विदुषी ने पूछा – हे गुरुवर, क्या मैं भी आपके साथ आश्रम के लिए धन एकत्र करने के लिए चल सकती हूँ? तब संत ने विनम्रता से उत्तर दिया – बालिका, तुमने जो मुझे आज जान दिया है उससे मुझे पता चला कि चित्त का सुख कहाँ है। अब मुझे किसी आश्रम की इच्छा नहीं रह गई है।

यह कहकर संत वापस अपने देश लौट गये और एकत्र किया धन उन्होंने गरीबों में बाँट दिया और स्वयं एक कुटिया बनाकर रहने लगे।

आत्म शांति एवं संतोष ही सुखी जीवन का रहस्य हैं। जब तक इंसान को संतोष नहीं मिलता वो जीवन की मोह-माया में फंसा ही रहता है और जो इस मोह माया में फंसता है, उसे कभी चैन नहीं मिलता। जीवन का सुख संतोष में है। अगर मनुष्य जो है, उसे स्वीकार कर ले और उसी में खुशियाँ तलाशे तो वो उसी क्षण सारे सुख का अनुभव कर लेता है। जिस तरह विदुषी एक वक्त के भोजन को ही अपना सौभाग्य मानती थी और कठोर धरा पर भी चैन से सोती थी। उसी कारण उसे जीवन में सभी सुखों का अनुभव हुआ। वही, एक संत बैरागी होते हुए भी, खाट पर चैन से नहीं सो पा रहा था क्योंकि उसे उसके पास जो था, उससे उनको संतोष नहीं था। जिस दिन उन्होंने यह सत्य स्वीकार लिया, उनको एक कुटिया में भी अपार शांति का अनुभव होने लगा।

यह कथा सुखी जीवन का रहस्य कहती है। आज घर में अपार धन-दौलत, ऐशो-आराम होते हुए भी लोग सुख-शांति से नहीं रहते क्योंकि उनके पास जो है, उसमें संतोष नहीं मिलता। कहते हैं ना जिनको दूसरों की थाली में घी ज्यादा दिखता है, वो कभी खुद चैन से नहीं रह सकते। व्यक्ति को हमेशा वो चाहिये, जो उसके पास नहीं है और वो मिल जाए तो नई महत्वकांक्षा उसकी जगह ले लेती है। इस तरह पूरा जीवन असंतोष में ही बीत जाता है और अंत समय में भी चैन नहीं मिलता।

अतः संतुष्टि ही जीवन का मूल मंत्र है। अगर इंसान में संतोष है तो कोई दुःख उसे तोड़ नहीं सकता। यही है सुखी जीवन का रहस्य।

➤ गुलशन अरोड़ा
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

बुद्धिमान मंत्री



एक बार की बात है। एक रियासत के मंत्री ने राजा को अपनी बेटी के विवाह समारोह में निमंत्रित किया। जब राजा अपने परिवार के साथ विवाह समारोह में पहुँचा तो मंत्री उन्हें सम्मानपूर्वक विशिष्ट आसन पर बैठाने ले गया, तो मंत्री यह देखकर बहुत लज्जित हुआ कि एक सफाईकर्मी वहाँ बैठा हुआ था। उसने सफाईकर्मी को सभी के सामने वहाँ से उठा दिया और उसे बहुत डाँटा। सफाईकर्मी ने बहुत अपमानित महसूस किया और बदला लेने की योजना बनाने लगा। अगले दिन सुबह वह जब वह राजा का कक्ष साफ कर रहा था, तभी वह जान-बूझकर बड़बड़ाया, “राजा कितने नादान हैं, उन्हें यह पता ही नहीं कि रानी और मंत्री के बीच क्या चल रहा है।” राजा आधी नींद में था। “यह क्या बकवास कर रहे हो?” उसने पूछा। “महाराज, मैं पूरी रात सो नहीं पाया। मैं तो नींद में बड़बड़ा रहा था,” सफाईकर्मी जवाब में बोला। हालाँकि, उसकी बात सुनकर राजा के मन में संदेह के बीज पड़ गए थे। राजा अब मंत्री से चिढ़ने लगा और समय-समय पर अपमानित करने लगा। एक दिन तो उसने द्वारपालों से यह तक कह दिया कि वे मंत्री को महल में घुसने ही न दें। मंत्री राजा के व्यवहार से बहुत चकित था, लेकिन कुछ विचार करने के बाद उसे समझ में आ गया कि सफाईकर्मी ही इसके लिए जिम्मेदार हो सकता है। मैंने उसका अपमान किया था और उसी का उसने बदला लिया है।

अब मुझे उसे दुबारा प्रसन्न करना होगा, तभी वह राजा की निगाह में मेरा सम्मान दुबारा दिला सकता है, मंत्री ने सोचा। एक दिन उसने सफाईकर्मी को अपने घर भोजन पर आने का निमंत्रण दिया और कहा, मेरे दोस्त, मुझे क्षमा कर दो।

मैंने तुम्हारा अपमान किया था। मुझे गलती का अहसास हो गया है। इन सुंदर कपड़ों को उपहार के रूप में ग्रहण करो। चलो, मेरे साथ भोजन करो। सफाईकर्मी प्रसन्न हो गया।

वह सोचने लगा, “मंत्री तो अच्छा आदमी है। मैंने ही उस दिन गलती कर दी थी”। अब सफाईकर्मी प्रसन्न था और प्रयास करने लगा कि मंत्री के बारे में राजा की धारणा बदल जाए।

एक बार जब वह राजा के कक्ष में गया तो राजा सो रहा था। वह बड़बड़ाने लगा, “अरे, राजा का तो दासी के साथ प्रेम संबंध है। बड़ी लज्जा की बात है”! राजा ने उसका बड़बड़ाना सुना तो उठकर बैठ गया। राजा ने सफाईकर्मी को बहुत डाँटा। सफाईकर्मी बोला, “क्षमा कर दें महाराज, मैं पूरी रात सो नहीं पाया। इसलिए दिन में ही नींद में बड़बड़ा रहा था”। राजा को अपनी गलती समझ में आ गई। इस तरह की अफवाह के चक्कर में आकर उसने अपने बहुत अच्छे सलाहकार की अनदेखी शुरू कर दी थी। राजा ने मंत्री को बुलाया और दोनों फिर से मित्र बन गए।

➤ जावेद

कार्यकारी सहायक

खिलखिलाते फूल



खिलखिलाते फूल, उनका क्या है वह तो बस मुस्कुराना जानते हैं ।
खिलखिलाते फूलों का क्या है, क्यों वो खिलखिलाते हैं ।
जीत कहीं सपनों में जो है, जीवन में अपनाते हैं ।

खिलखिलाते फूल, उनका क्या है वह तो बस मुस्कुराना जानते हैं ।
सपनों में जलचर भरकर, खुशहाली-सी पाते हैं ।
शौर्य के पथ पर विराज, नाम अपना दर्ज कराते हैं ।

खिलखिलाते फूल, उनका क्या है वह तो बस मुस्कुराना जानते हैं ।
पथ पर चले यूँ भुजा उठाये, हाथ ध्वज की लालिमा पाये ।
स्वर्ग की यह स्वतः अनुभूति, हर पहर वही भोग पाते हैं ।

खिलखिलाते फूल, उनका क्या है वह तो बस मुस्कुराना जानते हैं ।
पूर्ण चन्द्रिमा का है तेज, धरती, गगन, हवा का उल्लेख ।
विचारों का करके पूर्ण लेख, दुनियाँ को बतला जाते हैं ।

खिलखिलाते फूल, उनका क्या है वह तो बस मुस्कुराना जानते हैं ।
विचारों में आनन्द प्रत्येक, अमृत जैसा हुआ विशेष ।
चलकर पथ पर संविधान देख, परचम लहरा जाते हैं ।

खिलखिलाते फूल, उनका क्या है वह तो बस मुस्कुराना जानते हैं ।
कोमल पावन पथ ऐसा मन, लिया उसके भीतर स्वयं स्मरण ।
देखेंगे कोमल नयन प्रत्यक्ष, ये सबको बतला जाते हैं ।

खिलखिलाते फूल, उनका क्या है वह तो बस मुस्कुराना जानते हैं ।

➤ गोकुलनंद फुलारा
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

हिंदी शब्द की उत्पत्ति विकास यात्रा



“हिन्दी है हम, हिंदी हैं हम,
हिंदी है हम, वतन है
हिन्दोस्तां हमार”

सिंधु घाटी के पूर्व क्षेत्र में रहने वाले सिंधु से हिन्दी कहलाए और उनकी भाषा हुई हिन्दी।
अमीर खुसरो ने इसे नाम दिया – हिंदवी।

हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली संस्कृत से उत्पन्न इण्डो –यूरोपियन भाषा परिवार से संबंध रखती है। इसमें 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं। शब्दों के प्रयोग के आधार पर इनको तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज में बांटा गया है जैसे – कर्म, काम आवाक और कमेटी आदि।

हिन्दी भाषा का विकास क्रम इस प्रकार है :

वैदिक संस्कृत – सौर सैनी प्राकृत – अपभ्रंश

पुरातन हिन्दी (7वीं शताब्दी) पश्चिमी हिन्दी (अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग)

हिन्दुस्तानी (उर्दू – फारसी शब्दों का प्रयोग) – खड़ी बोली (अवधि – मैथिली का प्रयोग) – वर्तमान हिन्दी (19वीं शताब्दी)।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि हिन्दी को भारतीय गणतंत्र की राजभाषा के रूप मान्यता प्रदान की। तब से 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। संविधान के अनुच्छेद 343 से अनुच्छेद 351 तक हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देते हुए इसके प्रचार-प्रसार संबंधी दिशा-निर्देश तय किए गए। आज सरकारी काम-काज में हिन्दी भले ही शीर्ष पर ना हो परन्तु अपनी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि समर्थता के कारण हिन्दी सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा के रूप में उभरकर आ रही है।

आज हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में चौथे स्थान पर है जिनमें पहले स्थान पर मैनडेरिन, दूसरे स्थान पर स्पेनिश तथा तीसरे स्थान पर इंग्लिश और चौथे स्थान पर हिन्दी आती है। तकनीकी विकास के साथ-साथ भारत के बाहर हिन्दी बोलने वालों की मौजूदा संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। आंकड़ों के आधार पर नेपाल में 8 लाख, अमेरिका में 8,63,077, मॉरीशस में 4,50,170 फिजी में 2,50,292, साऊथ अफ्रीका में 1,50,000, सूरीनाम में 1,00,000 उगाण्डा में 45,800, ब्रिटेन में 20,000, न्यूजीलैंड में 20,000, जर्मनी में 16,000 और सिंगापुर में 3,000 लोग हिन्दी बोलते हैं। इस प्रकार श्रेष्ठ संस्कृति, वैज्ञानिकता और उपयोगिता के आधार पर हिन्दी भाषा अपना वर्चस्व स्थापित कर चुकी है।

➤ सविता पोखरियाल
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)



मातृभूमि

वक्त जो मिले भेद-भाव से तो भारत भ्रमण कर आना
अनेकता में एकता का सिद्धांत समझ जाना।
भाषाओं, विचारों और वेश भूषाओं में भेद है,
किंतु, संस्कृति और संस्कार एक है।
भांगड़ा, गरबा, कथकली यहाँ नृत्य अनेक है।
किंतु, खुशियाँ ज़ाहिर करने का माध्यम एक है।
इडली-सांभर, चिवड़ा-फाफड़ा, छोले-भटूरे व्यंजन अनेक हैं ।
किंतु स्वाद एक- दूसरे के लाखों में एक हैं ।
सर्दी-गर्मी, वर्षा-बसंत ऋतुएँ अनेक हैं ।
पर नीली चादर ताने अंबर एक है ।
त्योहार तो भाँति-भाँति के है यहाँ,
पर उनका सार एक है,
भुला के दुश्मनी लग जाओ गले
क्योंकि यही तो सच्ची भेंट है।
धन्यवाद है ईश्वर का जो मेरी मातृभूमि को सजाया,
उससे भी अधिक आभार, जो मुझे इस वतन का नागरिक बनाया ।

➤ निशा सिंह
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)



आखिर क्यों दिया राम ने लक्ष्मण को मृत्युदंड?

रामायण में एक घटना का वर्णन आता है कि श्री राम को न चाहते हुए भी अपनी जान से प्यारे अपने अनुज लक्ष्मण को मृत्युदंड देना पड़ता है। यह घटना उस वक़्त की है जब श्री राम लंका विजय करके अयोध्या लौट आते हैं और अयोध्या के राजा बन जाते हैं। एक दिन यम देवता कोई महत्त्वपूर्ण चर्चा करने श्री राम के पास आए। चर्चा प्रारम्भ करने से पूर्व वे भगवान श्री राम से कहते हैं कि मैं आपसे एक वचन मांगता हूँ कि जब तक मेरे और आप के बीच वार्तालाप चले, तब तक हमारे बीच कोई नहीं आएगा और जो आएगा, उसको मृत्युदंड देना पड़ेगा। भगवान राम, यम को वचन दे देते हैं। उनका वार्तालाप चल ही रहा था कि अचानक ऋषि दुर्वासा महल में प्रवेश करते हैं। उनको सामने लक्ष्मण जी मिलते हैं, पहुंचते ही वे श्री राम से मिलने का आग्रह करते हैं। लक्ष्मण जी उनको बताते हैं कि प्रभु अभी किसी वार्तालाप में व्यस्त हैं। आप आसन ग्रहण करें। वार्तालाप के बाद मैं श्री राम जी को आपके आने की सूचना देता हूँ। इतना सुनते ही ऋषि दुर्वासा आपसे बाहर हो गए और लक्ष्मण से बोले कि अगर मुझे अभी श्री राम से नहीं मिलवाया तो वह सारी अयोध्या को भस्म कर देंगे। लक्ष्मण जी समझ गए कि ये एक विकट स्थिति है जिसमें उनको या तो श्री राम जी की आज्ञा का उल्लंघन करना होगा या फिर संपूर्ण नगर को ऋषि दुर्वासा के श्राप से अग्नि में झोंकना होगा। लक्ष्मण ने शीघ्र ही यह निश्चय कर लिया कि उनको स्वयं का बलिदान देना होगा ताकि वो नगरवासियों को ऋषि दुर्वासा के श्राप से बचा ले। उन्होंने भीतर जाकर ऋषि दुर्वासा के आगमन की सूचना श्री राम जी को दी। लक्ष्मण जी को देखते ही यम देव वहां से अंतर्धान हो गए। भगवान श्री राम ने ऋषि दुर्वासा की आवभगत की परंतु अब श्री राम दुविधा में पड़ गए क्योंकि उन्हें अपने वचन के अनुसार लक्ष्मण को मृत्युदंड देना था। इस दुविधा में श्री राम ने अपने गुरु का स्मरण किया और कुछ रास्ता दिखाने को कहा। गुरुदेव ने कहा कि अपने किसी प्रिय का त्याग उसकी मृत्यु के समान ही है। अतः तुम अपने वचन का पालन करने के लिए लक्ष्मण का त्याग कर दो। लक्ष्मण ने यह सुना तो उन्होंने श्रीराम से यह कहा कि आप भूल कर भी मेरा त्याग नहीं करना। आप से दूर रहने से तो यह अच्छा है कि मैं आपके वचन का पालन करते हुए मृत्यु को गले लगा लूं। ऐसा कहकर लक्ष्मण जी ने जल समाधि ले ली।

➤ भूपेन्द्र

कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

जीवन में लक्ष्य की महत्ता



आज की इस जीवन शैली में यदि किसी से भी पूछा जाये कि क्या आपने अपने लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित कर रखे हैं तो सही मायने में यही जवाब मिलेगा या तो हाँ या ना। अगर जवाब हाँ है तो ये बहुत ही अच्छी बात है क्योंकि ज्यादातर लोग तो बिना किसी निर्धारित लक्ष्य के ही अपनी ज़िन्दगी बिताये जा रहे हैं। लक्ष्य एक ऐसा कार्य है जिसे हम सिद्ध करने की मंशा रखते हैं। जब हम सुबह घर से निकलते हैं तो हमें पता होता है कि हमें कहाँ जाना है और हम वहाँ पहुँचते हैं। सोचिये अगर हमें यह नहीं पता हो कि हमको कहाँ जाना है तो भला हम क्या करेंगे? इधर-उधर भटकने में ही समय व्यर्थ हो जायेगा। इसी तरह, इस जीवन में भी यदि हमने अपने लिए लक्ष्य नहीं बनाये हैं तो हमारी ज़िन्दगी तो चलती रहेगी पर जब बाद में हम पीछे मुड़ कर देखेंगे तो शायद हमें पछतावा हो कि हमने कुछ खास हासिल नहीं किया। लक्ष्य व्यक्ति को एक सही दिशा देता है। उसे बताता है कि कौन सा काम उसके लिए ज़रूरी है और कौन-सा नहीं। यदि लक्ष्य हो तो हम उसके मुताबिक अपने आप को तैयार करते हैं। हमारा दिमाग हमें उसी के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। दिमाग में लक्ष्य साफ़ हो तो उसे पाने के रास्ते भी साफ़ नज़र आने लगते हैं और इंसान उसी दिशा में अपने कदम बढ़ा देता है। भगवान ने इन्सान को सीमित ऊर्जा और सीमित समय दिया है। इसलिए ज़रूरी हो जाता है कि हम इसका उपयोग सही तरीके से करें। अगर हम अपने अंतिम लक्ष्य को ध्यान में रख कर कोई काम करते हैं तो उसमें हमारी एकाग्रता और ऊर्जा का स्तर बहुत अच्छा होता है। जब हम किसी पुस्तकालय में बिना किसी खास किताब को पढ़ने के मकसद से जाते हैं, तो हम यँ ही कुछ किताबों को उठाते हैं और उनके पन्ने पलटते हैं और कुछ एक पन्ने पढ़ डालते हैं, पर वहीं अगर हम किसी प्रोजेक्ट रिपोर्ट को पूरा करने के मकसद से जाते हैं तो हम उसके मतलब की ही किताबें चुनते हैं और अपना काम पूरा करते हैं। दोनों ही स्थितियों में हम समय उतना ही देते हैं पर हमारी कार्यक्षमता में जमीन-आसमान का फर्क होता है। इसी तरह जीवन में भी अगर हमारे सामने कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है तो हम इसी प्रकार से अपनी ऊर्जा बर्बाद करते रहेंगे और नतीजा कुछ खास नहीं निकलेगा लेकिन इसके विपरीत जब हम लक्ष्य को ध्यान में रखेंगे तो हमारी ऊर्जा सही जगह उपयोग होगी और हमें सही परिणाम देखने को मिलेंगे।

आज के युग में, जिससे पूछिए वही कहता है कि मैं एक सफल व्यक्ति बनना चाहता हूँ पर अगर ये पूछिए कि क्या हो जाने पर वह खुद को सफल व्यक्ति मानेगा तो इसका उत्तर कम ही लोग पूर्ण विश्वास से दे पाएंगे। सबके लिए सफलता के मायने अलग-अलग होते हैं और यह मायने लक्ष्य द्वारा ही निर्धारित होते हैं। यदि हमारा कोई लक्ष्य नहीं है तो हम एक बार औरों की नज़र में सफल हो सकते हैं, पर खुद की नज़र में कैसे सुनिश्चित करेंगे कि हम सफल हैं या नहीं? इसके लिए हमें अपने द्वारा ही तय किये हुए लक्ष्य को देखना होगा।

हमारे जीवन में कई अवसर आते-जाते रहते हैं। हम चाह कर भी सभी अवसरों का फायदा नहीं उठा सकते। हमें अवसरों को कभी हाँ तो कभी ना करना होता है। ऐसे में ऐसी परिस्थितियाँ आना स्वाभाविक है, जब हम सुनिश्चित नहीं कर पाते कि हमें क्या करना चाहिए। ऐसी स्थिति में हमारा लक्ष्य हमें राह दिखा सकता है।

इसलिए सफल होने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना बहुत ही ज़रूरी है और ये भी बहुत ज़रूरी है कि जब हम अपने लक्ष्य को हासिल करने के करीब पहुँच जाएँ और मंजिल को सामने पाएं तो कोई जल्दबाजी न करें और पूरे धैर्य के साथ अपना कदम आगे बढ़ाएं। बहुत से लोग लक्ष्य के निकट पहुँच कर अपना धैर्य खो देते हैं और गलतियाँ कर बैठते हैं, जिस कारण वे अपने लक्ष्य से चूक जाते हैं। इसलिए लक्ष्य के आखिरी पड़ाव पर पहुँच कर भी किसी तरह की असावधानी नहीं बरतनी चाहिए और लक्ष्य प्राप्त कर के ही दम लेना चाहिए।

➤ पवन

स्टोर अटैंडेंट (वित्त एवं प्रशा.)

सत्य और असत्य



किसी समय में एक राजा और एक पंडित जी महल में बैठे आपस में बातचीत कर रहे थे। बात - बात में पंडित जी राजा से बोले, महाराज मनुष्यों में असत्य बोलने की बुरी आदत है, मौका पाते ही वे असत्य बोलने से नहीं चूकते। राजा बोले, यह क्या कह रहे हो क्या इस दुनिया में कोई सच्चा इंसान नहीं है। मैं तुम्हारी बात नहीं मानता। अब मुझे ही देखो, मैं यहां का राजा हूँ मुझे किस का डर है मैं कभी असत्य नहीं बोलता। ऐसे अनेक लोग हैं, जो कभी असत्य नहीं बोलते। महाराज, मैं अभी-भी अपनी बात पर अडिग हूँ कि इस जगत के हर एक इंसान ने कभी ना कभी झूठ अवश्य बोला है। पंडित जी बड़े विश्वास से बोले, अच्छा यदि तुम्हें अपनी बात पर इतना विश्वास है तो साबित करके दिखाओ। राजा ने पंडित जी को चुनौती दी। पंडित जी मान गये और कुछ दिनों को मोहलत मांगी। इसके बाद 6 माह बीत गये। पंडित जी राजा से मिलने नहीं आये क्योंकि वो मुख्य नगर में एक बड़ा-सा घर बनवा रहे थे। उन्होंने बेहद खूबसूरत घर बनवाया। उस घर में उन्होंने एक शीशे का कमरा बनवाया। जब उनका आलीशान घर तैयार हो गया तो वो राजा से मिलने दरबार में गये। पंडित जी ने दरबार में एक साधु के रूप में प्रवेश किया और राजा से बोले, महाराज मैंने अपने लिए एक बहुत खूबसूरत घर बनवाया है। मैं वहाँ प्रतिदिन पूजा करता हूँ। ईश्वर मुझसे अत्यंत प्रसन्न है। वह उन लोगों को उस घर के एक कमरे में नजर आते हैं, जिन्होंने जीवन में कभी असत्य न बोला हो। मैं चाहता हूँ कि आप भी मेरे घर पधारो और अपनी आंखों से ईश्वर के दर्शन करो। राजा उस साधु के घर जाने के लिए बहुत उत्सुक थे परन्तु फिर भी उस साधु की बात की सच्चाई का पता लगाने के लिए पहले उन्होंने एक दरबारी को साधु के घर भेजा। उसने उस आलीशान घर की बहुत तारीफ की। वह शीशे वाले कमरे में भी गया पर वहां उसे ईश्वर के दर्शन नहीं हुए। झूठा सिद्ध होने के डर से वह महाराज को सत्य बताते हुए घबरा रहा था। इसलिए दरबार लौटकर उसने महाराज से कहा, महाराज मैंने वहां ईश्वर के दर्शन किये। उस साधु के घर की दीवार पर मैंने ईश्वर को देखा। राजा का फिर मन ललचाया, पर अपनी तसल्ली के लिए एक अन्य दरबारी को साधु के घर भेजा ताकि उन्हें पक्का यकीन हो जाए कि साधु सत्य बोल रहा है या असत्य। दूसरा दरबारी भी झूठा कहलाने के डर से राजा से वही बोला, जो पहले वाले ने बोला था।

अब राजा ने स्वयं उस साधु के घर जाने का विचार किया। राजा की सवारी साधु के घर पहुंची। रथ से उतरकर राजा घर के अंदर गये। शीशे के कमरे में पहुंचकर उन्होंने शीशे में अपना चेहरा देखा। ईश्वर कहीं नजर नहीं आये। तब राजा ने सोचा, वह साधु कह रहा था कि जिसने भी असत्य न बोला उसे ही ईश्वर दिखते हैं।

मेरे दो दरबारियों ने यहां ईश्वर को देखा। अब अगर मैं कहूंगा कि मुझे ईश्वर नहीं दिखे तो सब लोग मुझे झूठा साबित कर देंगे। राजा उस साधु के पास गये और बोले, साधु बाबा आप सही कह रहे थे। मैंने भी शीशे में ईश्वर को देखा है। महाराज, क्या वास्तव में आपने ईश्वर को देखा? साधु ने राजा से पूछा, हां - पक्का मैंने ईश्वर को देखा है। राजा ने उत्तर दिया। साधु ने एक बार फिर वहीं प्रश्न दोहराया तो राजा को गुस्सा आया और वो चिल्लाकर बोले, अगर तुम साधु न होते तो मैं तुम्हें सजा दे चुका होता। यह सुनकर साधु मुस्कराया और अपनी नकली दाढ़ी उतार दी। राजा चौंक गये और बोले पंडित जी आप! पंडित जी बोले महाराज, आपने कहा था कि आप कभी झूठ नहीं बोलते, लेकिन आपके दरबारियों ने आपसे असत्य बोला और आपने भी उनसे प्रभावित होकर असत्य बोल दिया। अब तो आप मानेंगे न महाराज कि प्रत्येक व्यक्ति कभी न कभी झूठ अवश्य बोलता है। राजा ने अपना सिर झुका लिया। वो अपनी भूल समझ गये थे और साथ ही इस घटना से उनको सबक भी मिल गया था कि बड़बोलापन कभी-कभी मुसीबत में डाल देता है।

शिक्षा - सत्य और असत्य हमारे भीतर ही है। जिस प्रकार मनुष्य कमजोरियों और ताकत का सम्मिश्रण है, उसी प्रकार सत्य और असत्य भी हमारे जीवन का ही भाग है। कमजोरी छिपाकर या असत्य बोलकर हम इस सत्य से नहीं भाग सकते।

➤ भवानी मिश्र
एम टी एस - (वित्त एवं प्रशा)

लालच बुरी बला है।



बहुत पहले की बात है एक गांव में राहुल नाम का एक लड़का रहता था। उसके मां-बाप बचपन में गुजर चुके थे। वह खेतों में काम करके अपना गुजारा बड़ी मुश्किल से करता था। उसके पास एक मुर्गी थी जो उसको रोज एक अण्डा देती थी। जब उसके पास कभी खाने के लिए कुछ नहीं होता था तो वह रात को अपनी मुर्गी का अण्डा खाकर ही सो जाता था। उसके पड़ोस में बासा नाम का एक व्यक्ति रहता था, जोकि सही नीयत का व्यक्ति नहीं था। जब उसने देखा कि राहुल अपना गुजारा सही ढंग से कर रहा है तो उसने एक दिन राहुल की मुर्गी को मार कर और पका कर खा लिया। जब राहुल घर आया उसने घर पर मुर्गी को नहीं देखा तो इधर-उधर अपनी मुर्गी को ढूँढने लगा। उसने मुर्गी के कुछ पंख बासा के घर के बाहर देखे। उसने बासा से बात की तो बासा ने कहा कि मेरी बिल्ली एक मुर्गी को पकड़कर लायी थी। मैंने उसे पका कर खा लिया। मुझे क्या पता था कि वह तुम्हारी मुर्गी थी।

राहुल ने बासा से कहा कि वह इसकी शिकायत न्यायाधीश से करेगा। यह बात सुनकर बासा ने मुर्गी की जगह राहुल को एक छोटी-सी बत्तख दे दी। राहुल ने उस बत्तख को पाला जिससे कुछ दिनों बाद वह बत्तख बड़ी हो गई और अण्डे देने लगी। एक रात को जब बहुत बारिश आ रही थी तो एक साधु भीगता हुआ रहने के लिए जगह मांगने के लिए बासा के घर पहुंचा लेकिन बासा ने उसको मना कर दिया। उसके बाद वह राहुल के घर गया। राहुल ने उसको रहने की जगह दी और खाना भी खिलाया।

अगली सुबह वह जब राहुल के घर से जाने लगा तो जाते हुए उसने राहुल की बत्तख के सिर पर हाथ फेरा। उसके बाद, जब बत्तख ने अण्डा दिया तो वह सोने का था। राहुल यह देखकर बहुत खुश हुआ। अब बत्तख जब भी अण्डा देती तो वह सोने का होता था। सोने के अण्डे को बेचकर राहुल की सारी गरीबी दूर हो गयी लेकिन फिर भी वह साधारण जिन्दगी जी रहा था। एक दिन बासा ने बत्तख को सोने का अण्डा देते हुए देख लिया और न्यायाधीश के पास गया और न्यायाधीश से बोला कि राहुल ने कल मेरी बत्तख चुरा ली। जब न्यायाधीश ने राहुल से पूछा तो उसने सारी बात बतायी कि किस तरह से बासा ने ही उसे बत्तख दी थी। न्यायाधीश ने कहा था कि कल मैं इस बात का फैसला करूँगा कि बत्तख किसको मिलेगी। बत्तख ने रोज की तरह न्यायाधीश के पास भी सोने का अण्डा दिया ।

अगले दिन न्यायाधीश ने दोनों को सामान्य अण्डा दिखाया और कहा कि यह कल तुम्हारी बत्तख ने दिया है। अलग से पूछने पर राहुल ने न्यायाधीश को सच बताया कि उसकी बत्तख सोने का अण्डा देती थी, जबकि बासा ने कहा था कि उसकी बत्तख सामान्य अण्डा देती है। न्यायाधीश ने एक नई बत्तख लेकर बासा को दे दी और राहुल को सोने का अण्डा देने वाली बत्तख दे दी। राहुल सोने का अण्डा देने वाली बत्तख दुबारा पाकर बहुत खुश हुआ।

सीख - हमें कभी भी लालच नहीं करना चाहिए और दूसरों को देखकर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए ।

➤ बिशन सिंह
एम टी एस - (वित्त एवं प्रशा)



ऐ सुख क्या है तेरा ठिकाना

ऐ सुख तू क्यों बन बैठा है अन्जाना, आखिर क्या है तेरा ठिकाना,
कहाँ कहाँ - ढूँढा तुझको पर, तू न कहीं मिला मुझको
ढूँढा ऊँचे - ऊँचे मकानों में, बड़ी-बड़ी दुकानों में
स्वादिष्ट पकवानों में, चोटी के धनवानों में ।
वो भी तुझको ही ढूँढ रहे थे, बल्कि मुझको ही पूछ रहे थे,
क्या आपको कुछ पता है, यह सुख आखिर कहाँ रहता है?
मेरे पास तो दुःख का पता था, जो सुबह-शाम अक्सर मिलता था
परेशान होकर शिकायत भी लिखवाई, पर यह कोशिश भी काम न आई ,
उम्र अब ढलान पर है, हौंसला अब थकान पर है
हाँ, उसकी तस्वीर है मेरे पास, और अब भी बची हुई है आस
में भी हार नहीं मानूँगा, सुख के रहस्य को जानूँगा,
बचपन में मिला करता था, मेरे साथ रहा करता था
पर जबसे मैं बड़ा हो गया, मेरा सुख मुझसे जुदा हो गया।
मैं फिर भी नहीं हुआ हताश, जारी रखी उसकी तलाश,
एक दिन जब आवाज ये आई, क्या मुझको ढूँढ रहा है भाई
मैं तो तेरे अंदर छुपा हुआ हूँ, तेरे ही घर में बसा हुआ हूँ
मेरा नहीं है कुछ भी मोल , सिक्कों में मुझको न तोल ,
मैं बच्चों की मुस्कानों में हूँ, हारमोनियम की तानों में हूँ
पत्नी संग चाय पीने में हूँ, परिवार के संग जीने में हूँ
माँ-बाप के आशीर्वाद में हूँ, रसोई घर के पकवानों में हूँ
बच्चों की सफलता में हूँ, माँ की निश्छल ममता में हूँ
मैं तो हूँ बस एक अहसास, बंद कर दे तू मेरी तलाश
जो मिला उसी में कर संतोष, आज को जी ले कल की ना सोच
कल के लिए आज को न खोना, मेरे लिए कभी दुखी न होना
मैं तो तेरे अंदर छुपा हुआ हूँ, तेरे ही घर मैं बसा हुआ हूँ।

➤ शाहिद
स्टेशनरी इंचार्ज

दोस्त का जवाब



बहुत समय पहले की बात है। दो दोस्त बीहड़ इलाकों से होकर शहर जा रहे थे।

गर्मी बहुत अधिक होने के कारण वो बीच-बीच में रुकते और आराम करते।

उन्होंने अपने साथ खाने-पीने की भी कुछ चीजें रखी हुई थीं।

जब दोपहर में उन्हें भूख लगी तो दोनों ने एक जगह बैठकर खाने का विचार किया।

खाना खाते-खाते दोनों में किसी बात को लेकर बहस छिड़ गयी और धीरे-धीरे बात इतनी बढ़ गयी

कि एक दोस्त ने दूसरे को थप्पड़ मार दिया। थप्पड़ खाने के बाद भी दूसरा दोस्त चुप रहा और उसने

विरोध भी नहीं किया। बस, उसने पेड़ की एक टहनी उठाई और उससे मिट्टी पर लिख दिया “आज मेरे

सबसे अच्छे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मारा”।

थोड़ी देर बाद उन्होंने पुनः यात्रा शुरू की। मन-मुटाव होने के कारण वो बिना एक-दूसरे से बात किये आगे बढ़ते जा रहे थे। तभी थप्पड़ खाए दोस्त के चीखने की आवाज़ आई, वह गलती से दलदल में फँस गया था। दूसरे दोस्त ने तेजी दिखाते हुए उसकी मदद की और उसे दलदल से बाहर निकाल लिया।

इस बार भी वह दोस्त कुछ नहीं बोला उसने बस एक नुकीला पत्थर उठाया और एक विशाल पेड़ के तने पर लिखने लगा “आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मेरी जान बचाई”

उसे ऐसा करते देख दूसरे मित्र से रहा नहीं गया और उसने पूछा, जब मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा तो तुमने मिट्टी पर लिखा और जब मैंने तुम्हारी जान बचाई तो तुम पेड़ के तने पर कुरेद-कुरेद कर लिख रहे हो, ऐसा क्यों?

” जब कोई तकलीफ दे तो हमें उसे अन्दर तक नहीं बैठाना चाहिए ताकि क्षमा रूपी हवाएं इस मिट्टी की तरह ही उस तकलीफ को हमारे जेहन से बहा ले जाएं, लेकिन जब कोई हमारे लिए कुछ अच्छा करे तो उसे इतनी गहराई से अपने मन में बसा लेना चाहिए कि वो कभी हमारे जेहन से मिट ना सके” दोस्त का जवाब आया.

➤ संजय
एम टी एस

एक बाल्टी दूध



एक बार एक राजा के राज्य में महामारी फैल गयी। चारों ओर लोग मरने लगे। राजा ने इसे रोकने के लिये बहुत सारे उपाय करवाये मगर कुछ असर न हुआ और लोग मरते रहे। दुखी राजा ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। तभी अचानक आकाशवाणी हुई। आसमान से आवाज़ आयी कि हे राजा तुम्हारी राजधानी के बीचों-बीच जो पुराना सूखा कुआँ है, अगर अमावस्या की रात को राज्य के प्रत्येक घर से एक - एक बाल्टी दूध उस कुएं में डाला जाये तो अगली ही सुबह ये महामारी समाप्त हो जायेगी और लोगों का मरना बन्द हो जायेगा। राजा ने तुरन्त ही पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दी कि महामारी से बचने के लिए अमावस्या की रात को हर घर से कुएं में एक-एक बाल्टी दूध डाला जाना अनिवार्य है।

अमावस्या की रात जब लोगों को कुएं में दूध डालना था, उसी रात राज्य में रहने वाली एक चालाक एवं कंजूस बुढ़िया ने सोचा कि सारे लोग तो कुएं में दूध डालेंगे और अगर मैं अकेली एक बाल्टी पानी डाल दूँ तो किसी को क्या पता चलेगा। इसी विचार से उस कंजूस बुढ़िया ने रात में चुपचाप एक बाल्टी पानी कुएं में डाल दी। अगले दिन जब सुबह हुई तो लोग वैसे ही मर रहे थे। कुछ भी नहीं बदला था क्योंकि महामारी समाप्त नहीं हुई थी। राजा ने जब कुएं के पास जाकर इसका कारण जानना चाहा तो उसने देखा कि सारा कुआँ पानी से भरा हुआ है। दूध की एक बूंद भी वहां नहीं थी। राजा समझ गया कि इसी कारण से महामारी दूर नहीं हुई और लोग अभी भी मर रहे हैं।

दरअसल ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि जो विचार उस बुढ़िया के मन में आया था, वही विचार पूरे राज्य के लोगों के मन में आ गया और किसी ने भी कुएं में दूध नहीं डाला।

मित्रों, जैसा इस कहानी में हुआ, वैसा ही हमारे जीवन में भी होता है। जब भी कोई ऐसा काम आता है जिसे बहुत सारे लोगों को मिल कर करना होता है तो अक्सर हम अपनी जिम्मेदारियों से यह सोच कर पीछे हट जाते हैं कि कोई न कोई तो कर ही देगा और हमारी इसी सोच की वजह से स्थितियां वैसी की वैसी बनी रहती हैं। अगर हम दूसरों की परवाह किये बिना अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने लग जायें तो पूरे देश में ऐसा बदलाव ला सकते हैं, जिसकी आज हमें ज़रूरत है।

➤ मोहम्मद आसिफ
एम टी एस

ईमानदारी का इनाम



एक गांव में रामलाल नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह घर को रंगने का काम करता था। वह अपना काम बड़ी ईमानदारी और मेहनत से करता था। एक दिन गांव के जमींदार ने रामलाल को बुलाया। जमींदार ने कहा मेरे पास एक नाव है और तुमको आज ही के दिन उस पर रंग करना है।

जमींदार ने रामलाल से उसका रंग करने का पैसा 1500 रूपए देने के लिए कहा। इसके बाद जमींदार ने रामलाल को नदी के किनारे खड़ी नाव दिखा दी। रामलाल अपने घर से रंग लाकर बड़ी सफाई के साथ उसमें रंग करने लगा। वह जब रंग कर रहा था तो उसको नाव में एक छेद नज़र आया। उसने सोचा यदि मैं इसके ऊपर केवल रंग कर दूंगा तो यह नाव डूब जायगी। इसलिए पहले उसने छेद को भरा फिर उस पर रंग किया। नाव के रंग का काम पूरा होने बाद वह जमींदार को नाव दिखाने लगा।

जमींदार ने नाव देखने के बाद, पैसे अगले दिन देने की शर्त रखी। अगले दिन जमींदार की पत्नी और बच्चे उस नाव में बैठकर नदी के पार घूमने के लिए चले गए। शाम को जब जमींदार का नौकर लौटा तो उसने घर के बाकी सदस्यों को घर में न देखकर जमींदार से पूछा तो जमींदार ने बताया कि वह सब नाव में बैठकर नदी के पार घूमने गये हैं। नौकर ने जमींदार को बताया कि उस नाव में तो छेद था।

जमींदार इस बात से बहुत परेशान हो गया। इसके कुछ देर बाद ही जमींदार का परिवार सकुशल घर लौट आया। उसको पता चल चुका था कि राम लाल ने रंग करते समय नाव का छेद भर दिया था। इसके बाद जब रामलाल अपने पैसे लेने आया तो जमींदार ने उसको पैसे दिए। रामलाल ने जब पैसे गिने तो उसमें पूरे 6 हजार रुपये थे।

रामलाल ने कहा, आपने गलती से मुझे ज्यादा पैसे दे दिये हैं। जमींदार ने कहा नहीं, यह तो तुम्हारे काम का इनाम है, जो तुमने किया है। तुमने नाव में रंग करते समय जो छेद भरा था, उसकी वजह से मेरे परिवार की जान बच गयी। रामलाल पैसे लेकर घर चला गया। वह बहुत खुश था।

सीख- ईमानदारी और मेहनत से काम करने का नतीजा हमेशा अच्छा ही होता है।

उमेश सिंह
एम टी एस - (वित्त एवं प्रशासन)

अवसर की पहचान



एक बार एक ग्राहक चित्रों की दुकान पर गया। उसने वहां पर अजीब से चित्र देखे। पहले चित्र में चेहरा पूरी तरह बालों से ढका हुआ था और पैरों में पंख थे। एक दूसरे चित्र में सिर पीछे से गंजा था।

ग्राहक ने पूछा - यह चित्र किसका है?

दुकानदार ने कहा - अवसर का।

ग्राहक ने पूछा - इसका चेहरा बालों से ढका क्यों है ?

दुकानदार ने कहा - क्योंकि अक्सर जब अवसर आता है तो मनुष्य उसे पहचानता नहीं है।

ग्राहक ने पूछा - और इसके पैरों में पंख क्यों है ?

दुकानदार ने कहा - वह इसलिए कि यह तुरंत वापस भाग जाता है, यदि इसका उपयोग न हो तो यह तुरंत उड़ जाता है।

ग्राहक ने पूछा - और यह दूसरे चित्र में पीछे से गंजा सिर किसका है ?

दुकानदार ने कहा - यह भी अवसर का है। यदि अवसर को सामने से ही बालों से पकड़ लेंगे तो वह आपका है। अगर आपने उसे थोड़ी देरी से पकड़ने की कोशिश की तो पीछे का गंजा सिर हाथ आयेगा और वो फिसलकर निकल जाएगा। वह ग्राहक इन चित्रों का रहस्य जानकर हैरान था, पर अब वह बात समझ चुका था।

दोस्तो,

आपने कई बार दूसरों को यह कहते हुए सुना होगा या खुद भी कहा होगा कि हमें अवसर ही नहीं मिला लेकिन ये अपनी जिम्मेदारी से भागने और अपनी गलती को छुपाने का बस एक बहाना है। वास्तव में भगवान ने हमें ढेरों अवसरों के बीच जन्म दिया है। अवसर हमेशा हमारे सामने से आते-जाते रहते हैं पर हम उसे पहचान नहीं पाते या पहचानने में देर कर देते हैं और कई बार हम सिर्फ इसलिए चूक जाते हैं क्योंकि हम बड़े अवसर की ताक में रहते हैं। पर अवसर बड़ा या छोटा नहीं होता है। हमें हर अवसर का भरपूर उपयोग करना चाहिए।

➤ प्रदीप सिंह

(एमटीएस-पी-11)

जैसी करनी, वैसी भरनी



एक आदमी नदी के किनारे बैठकर मछली पकड़ रहा था। उसे बैठे-बैठे बहुत समय हो गया। अचानक उसके जाल में मछली फंस जाती है फिर वह अपनी मछली को जाल से निकाल कर एक पानी की बाल्टी में रखने ही वाला होता है कि अचानक वहां एक व्यक्ति आकर उससे उसकी मछली को छीन लेता है। मछली पकड़ने वाला उससे कहता है कि मेरी मछली मुझे वापस दे दो तो वह व्यक्ति उसको मछली नहीं देता और कहता है कि मैं तुम्हें मछली नहीं दूंगा। जो करना है कर ले। मछली पकड़ने वाला उसको कुछ नहीं कहता और वह चुप हो जाता है। मछली छीनने वाला वहां से जैसे ही निकलता है, अचानक उसके अंगूठे पर मछली काट लेती है और वह अपनी नदी में वापस चली जाती है और उस व्यक्ति के अंगूठे से बहुत खून बहने लग जाता है। वह आदमी चिल्लाता हुआ डॉक्टर के पास जाता है और डॉक्टर से कहता है कि डॉक्टर साहब मेरे अंगूठे में मछली ने काट लिया है, कुछ कीजिए। डॉक्टर उसकी चोट का देखकर कहता है कि इसमें तो जखम हो गया है, इस पर पट्टी करनी होगी। डॉक्टर उसके अंगूठे पर पट्टी कर के उसको घर भेज देता है। अचानक फिर तीन दिन बाद वह आदमी दुबारा आता है और डॉक्टर साहब से कहता कि ये जखम तो अभी भी वैसे का वैसे है। डॉक्टर साहब उसके अंगूठे का जखम देखकर उसके अंगूठे को काटने को कहते हैं। वह व्यक्ति डर कर कहता है कि डॉक्टर साहब आप मेरे अंगूठे को काट दीजिए तो डॉक्टर उसके अंगूठे को काटकर और उस पर पट्टी करके दुबारा घर भेज देता है। फिर वह आदमी तीन दिन बाद दुबारा आता है और डॉक्टर साहब से कहता कि डॉक्टर साहब ये जखम तो वैसे का वैसे ही है। डॉक्टर साहब उसके जखम को देखकर कहते हैं कि इस हाथ को काटना पड़ेगा अगर यह हाथ नहीं काटा गया तो यह जखम और बढ़ सकता है। मरता क्या नहीं करता तो वह आदमी डॉक्टर से कहता है कि डॉक्टर साहब आप इस हाथ को काट दीजिए। डॉक्टर उसके आधे हाथ को काट देते हैं और उस पर पट्टी बांध देते हैं। वह आदमी वहां से चला जाता है। इसके बाद फिर दुबारा वह तीन दिन बाद आता है और डॉक्टर से कहता है कि डॉक्टर साहब ये जखम तो दुबारा वैसे का वैसे ही है। डॉक्टर उसके जखम को देखकर फिर काटने का कहता है। वह आदमी और घबरा जाता है और उसे दुबारा काटने को कहता है। डॉक्टर उसके पूरे हाथ को काट देते हैं और उस पर पट्टी कर उसे घर भेज देते हैं और वह वहां से चला जाता है। अगले दिन उसको मित्र उसे रास्ते में मिलता है और उससे कहता है कि यह तेरे साथ क्या हो गया। तेरा हाथ कैसे कट गया तो वह बड़े अफसोस के साथ उसे पूरी कहानी बताता है। उसका दोस्त बहुत गुस्सा होकर कहता है कि जा उसे दूढ़ और उसके पैर पकड़, नाक रगड़ तथा उससे माफी मांग और उससे कह कि मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई है। वह आदमी उस व्यक्ति की खोज में निकल जाता है और वो व्यक्ति उसे वहीं नदी के किनारे मछली पकड़ता हुआ मिलता है। वह उसके पैरों में गिरकर उससे माफी मांगता है और उससे कहता है कि ऐसा तुमने क्या तंत्र-मंत्र किया। कौन-सा श्राप दिया जिससे मेरी यह हालत हो गई तो वह आदमी मुस्कुराकर कहता है कि मैंने ना तंत्र-मंत्र और किया ना ही मैंने तुम्हें श्राप दिया। मैंने आसमान देख भगवान से यह कहा था कि इसने मुझे अपनी ताकत दिखाई है, तू इसे अपनी ताकत दिखा।

सीख- इससे हमें यह सीख मिलती है कि कर्म फल भुगतना ही पड़ता है। चाहे अभी भुगतना पड़े या बाद में। जैसी करनी, वैसी भरनी

रोहन कुमार
सुरक्षा गार्ड



राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
15 एनबीसीसी, टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस
नई दिल्ली-110066